हँसती दुनिया

₹ 10/-

वर्ष 41 • अंक 8 • अगस्त 2014

JAI RAM DASS

NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD

RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER

Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744

27217175, 27437475, 27443939

Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 41
अंक 8

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

अगस्त
2014

स्तम्भ

सबसे पहले	4
अनमोल वचन	6
वर्ग पहेली	10
जन्म दिन मुबारक	12
सम्पूर्ण अवतार बाणी	22
भैया से पूछो	34
पढ़ो और हँसो	46
रंग भरो परिणाम	48
आपके पत्र मिले	64

चित्रकथा

दादा जी	14
चम्पू	52
फोटो फीचर	56–57

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

अहंकार विनाश का कारण	शिखा जोशी	7
चोर पकड़े गये	राजकुमार जैन	19
उपकार का फल	आर. डी. भारद्वाज	27
मीकू और लकड़बग्घा	साबिर हुसैन	38
सच्चा दोस्त	राधेलाल 'नवचक्र'	44
महादान	नीलम ज्योति	59

कविताएं

देश हमारा अपना	शोभा 'शर्मा'	5
तिरंगा ऊँचा लहराए	हरजीत निषाद	11
मेरे खेत की माटी	आशा खत्री 'लता'	25
हरियाली का पलना	कमल सिंह चौहान	33
रखवाली करते ताला जी	बद्रीप्रसाद वर्मा	40
हम अटूट दृढ़ विश्वासी हैं!	अशोक जैन	51
आजादी को कभी न भूलें	डॉ. हरीश निगम	58

विशेष/लेख

झण्डागीत के अमर रचयिता	विद्या प्रकाश	23
महान वैज्ञानिक मेघनाद साह	राजेन्द्र यादव	36
पर्यावरण और उद्योग	अंकुश्री	41
विज्ञान प्रश्नोत्तरी	घमण्डी लाल अग्रवाल	43
समुद्र का जल नमकीन क्यों होता है	डॉ. रतिराम सिंह	62

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एल. गुलाटी, सम्पादक विमलेश आहूजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सद्कर्म

हम मानव दो पैरों से चलते हैं। चलते हुए एक पैर आगे तो होगा ही। आगे चलते हुए पैर को अगर यह अभिमान आ जाए कि मैं आगे हूँ और दूसरा पीछे; फिर तो यात्रा का आरम्भ होने से पहले ही समापन हो जाएगा।

यात्रा को ठीक ढंग से तय करना है तो यह जान लेना होगा कि पीछे वाले पैर का कर्म भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि आगे वाले पैर का। क्योंकि पीछे वाला पैर आगे आएगा तभी चलना सम्भव हो पाएगा। इसमें न तो आगे बढ़ने वाले पैर का अभिमान है और न ही पीछे रहने वाले पैर का अपमान। लेकिन एक पल के बाद आगे–पीछे, आगे–पीछे होते–होते ही यात्रा तय होती है। इसलिए दोनों की बराबर की आवश्यकता होती है।

इसी तरह जीवन में आगे बढ़ने के लिए कर्म की आवश्यकता होती है। कर्म करते समय अभिमान और कार्य की पूर्ति न होने पर अपमान नहीं समझना चाहिए। परिश्रम और सद्बुद्धि से किया कर्म हमेशा फलित होता है। उसकी अपेक्षा हम करें या न करें जैसे पानी पीने से प्यास बुझती है यह उसका प्रतिफल है, इसी प्रकार हर कार्य का प्रतिफल होता है,। हर कार्य करने में एक तत्व बहुत महत्वपूर्ण होता है वह है आत्म–संतुष्टि। यह आत्म–संतुष्टि ही हमारे हर कर्म को सद्कर्म में परिवर्तित कर देती है।

हमें हर व्यक्ति के कार्य को उतना ही महत्व देना है जितना हम अपने कार्य को देते हैं। यही सोच अपनाकर सद्कर्म में प्रयासरत रहना ही सुकर्म तथा सद्कर्म होता है।

– विमलेश आहूजा

बालगीत : शोभा शर्मा

देश हमारा अपना

सत्य अहिंसा के प्रहरी हैं,
दुनियाभर में सच्चे।
भारत देश हमारा अपना,
हम भारत के बच्चे।।

पढ़ी राम की रामायण है,
और कृष्ण की गीता।
समरभूमि में आकर हमसे,
कभी न कोई जीता।।

छक्के छुड़ा दिये दुश्मन के,
भागे अच्छे–अच्छे।

हमने जब चाहा धरती पर,
चंदा–सूरज आए।
अपने एक इशारे पर हैं,
पर्वत शीश झुकाए।।

नहीं कभी कोई दे सकता,
आकर हमको गच्चे।

ज्ञान और विज्ञान हमारे,
आंगन आकर खेलें।
कम्प्यूटर युग से है नाता,
सभी चुनौती झेलें।।

दुर्गम पथ पर आगे बढ़ते,
भले उमर के कच्चे।

संग्रहकर्त्ता : पृथ्वीराज (घोण्डा, दिल्ली)

अनमोल वचन

★ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है।

★ निरंतर कार्य करने वाले को सफलता अवश्य मिलती है।

– वेदव्यास

★ जीवन बनाना है तो समय नष्ट न करो।

– फ्रेंकलिन

★ चरित्र एक ऐसा हीरा है जो सभी पाषाणों को काट देता है।

– कार्लाइल

★ काम, क्रोध व लोभ आत्मा का पतन कर मनुष्य का सर्वनाश कर देते हैं।

– गीता

★ सच्चा मनुष्य वही है जो बुराई का बदला भलाई से दे।

– महात्मा गाँधी

★ दुर्वचन पशुओं तक को अप्रिय लगते हैं।

– महात्मा बुद्ध

★ कायर तभी धमकी देता है जब वह सुरक्षित होता है।

– गेटे

★ विद्यार्थी की सच्ची सुन्दरता उसके गुणों और योग्यताओं में है न कि बाहरी फैशन में। – प्रेमचन्द

★ प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है।

– स्वामी विवेकानन्द

★ बुराई करने के अवसर तो दिन में सौ बार आते हैं परन्तु भलाई करने का अवसर वर्ष में एक ही बार आता है। – वाल्टेयर

★ लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा उत्पन्न नहीं हो सकती।

– अरस्तु

★ कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं।

– गीता उपदेश

★ मेहनत वह चाबी है जो किस्मत का दरवाजा खोल देती है।

– चाणक्य

अहंकार विनाश का कारण

भीष्म पितामह युद्धभूमि में बाणों की शय्या पर लेटे थे। महाभारत युद्ध समाप्ति के पश्चात् युधिष्ठिर नित्य भीष्म पितामह के पास राजधर्म, नीति, ज्ञान एवं धर्म की शिक्षा लेने जाते थे।

एक दिन भीष्म पितामह ने एक उन्हें एक कथा सुनाई–

बहुत दिन हुए हिमालय क्षेत्र में एक बहुत बड़ा सेमल का वृक्ष था। हरे–भरे पत्तों से लदी हुई उसकी लम्बी–लम्बी शाखाएं सब ओर फैली हुई थीं। उसके नीचे वन में रहने वाले हाथी और मृग आदि अनेकों जानवर विश्राम करते थे। उसकी छाया बड़ी ही घनी थी तथा उसका घेरा बहुत बड़ा था। अनेकों व्यापारी तथा वन में रहने वाले तपस्वी भी मार्ग में जाते समय उसके नीचे ठहरते थे।

एक दिन नारद जी उधर से निकले। उन्होंने उसकी लम्बी–लम्बी शाखाएं और चारों ओर फैली हुई डालियां देखकर उसके पास जाकर कहा– शल्मले! तुम बड़े ही रमणीय और मनोहर हो। वृक्षप्रवर! तुम्हारे कारण जीवों को बड़ा सुख मिलता है। तुम्हारी छाया में अनेकों पक्षी व मृग और गज सर्वदा निवास करते हैं। मैं देखता हूँ तुम्हारी लम्बी–लम्बी शाखाएं और सघन डालियों को वायु कभी नहीं तोड़ता। क्या पवन देवता का तुम्हारे ऊपर विशेष प्रेम है? अथवा वह तुम्हारा मित्र हैं, जिससे कि इस वन में वह सदा ही तुम्हारी रक्षा करता रहता है।

यह वायु तो जब वेग भरता है तो छोटे–बड़े सभी प्रकार के वृक्षों और पर्वत शिखरों को भी अपने स्थान से हिला देता है। अवश्य, भीषण होने पर भी, तुममें बन्धुत्व या मैत्री मानने के कारण ही वायुदेव सर्वदा तुम्हारी रक्षा करता रहता है। मालूम होता है तुम वायु के सामने अत्यन्त विनम्र होकर कहते होंगे कि "मैं तो आपका ही हूँ" इसी से वह तुम्हारी रक्षा करता है।

कथा महाभारत से : शिखा जोशी

सेमल ने कहा– ब्रह्मर्षि! वायु न मेरा मित्र है, न बन्धु है और न ही सुहृदयी है। वह ईश्वर भी नहीं है जो मेरी रक्षा करेगा, किन्तु मेरे अन्दर जो भीषण बल और पराक्रम है, उसके आगे वायु की शक्ति कुछ भी नहीं है। जिस समय वह वृक्ष, पर्वत तथा दूसरी वस्तुओं को तोड़ता–फोड़ता मेरे पास पहुँचता है उस समय मैं अपनी शक्ति से उसकी गति को रोक देता हूँ।

नारद जी ने कहा– सेमले! इस विषय में तुम्हारी दृष्टि निःसंदेह ठीक नहीं है। संसार में वायु के समान तो कोई भी बलवान नही है। उसकी बराबरी तो इन्द्र, यम, कुबेर और वरुण भी नहीं कर सकते, फिर तुम्हारी तो बात ही क्या है? संसार में जीव जितनी भी चेष्टाएं करते हैं, उन सबका हेतु व प्राण देने वाला वायु ही है। वास्तव में तुम बड़े ही दुर्बद्धि और अहंकारी हो, केवल बातें बनाना जानते हो। इसलिए ऐसा झूठ बोल रहे हो। चन्दन, स्पंदन, साल, सरल, देवदारु, बेंत और धन्चनं आदि जो तुमसे अधिक बलवान् वृक्ष हैं वे भी वायु का निरादर नहीं करते। वे अपने और वायु के बल को अच्छी तरह जानते हैं, इसी से वे सदा उसे सिर झुकाते हैं। तुम जो वायु के अनन्त बल को नहीं जानते, यह तुम्हारा मोह ही है। अच्छा तो अब मैं वायु के पास जाकर तुम्हारी ये बातें सुनाता हूँ।

सेमल को इस प्रकार डपटकर नारद ने वायुदेव के पास जाकर उसकी सब बातें सुना दीं। इससे उसे बड़ा क्रोध हुआ और वह सेमल के पास जाकर कहने लगा– सेमले! जिस समय नारद जी तेरे पास से होकर निकले थे, उस समय क्या तूने मेरी निन्दा की थी? तू जानता नहीं, मैं साक्षात् वायुदेव हूँ। देख, मैं अभी तुझे अपनी शक्ति का परिचय कराये देता हूँ। ब्रह्माजी ने प्रजा की उत्पत्ति करते समय तेरी छाया में विश्राम किया था; इसी से मैं अब तक तुझ पर कृपा करता आ रहा था और तू मेरी झपट से बचा रहता था। परन्तु अब तो तू एक साधारण जीव के समान मेरी अवज्ञा करने लगा। अच्छा, तो ले, मैं तुझे अपना रूप दिखाता हूँ, जिससे फिर कभी तुझे मेरा तिरस्कार करने का साहस न हो।

वायु के इस प्रकार कहने पर सेमल ने हँसकर कहा– पवनदेव! यदि तुम मुझ पर कुपित हो तो अवश्य अपना रूप दिखाओ। देखें, क्रोध करके तुम मेरा क्या कर लेते हो? मैं तुमसे बल में कहीं बढ़–चढ़कर हूँ, इसलिए तुमसे जरा भी नहीं डर सकता।

सेमल के ऐसा कहने पर वायु बोला– 'अच्छा कल मैं तुझे अपना पराक्रम दिखाऊँगा।' इतने में ही रात आ गयी। सेमल ने अपने को वायु के समान बली न देखकर सोचा, "मैंने नारद जी से जो कुछ कहा था वह ठीक नहीं था। बल में वायु के सामने मैं बहुत असमर्थ हूँ। इसमें भी संदेह नहीं, मैं तो दूसरे कई वृक्षों से भी दुर्बल हूँ। परन्तु बुद्धि में मेरे समान उनमें से कोई नहीं है। अतः मैं बुद्धि का आश्रय लेकर ही वायु के भय से छूटूंगा। यदि दूसरे वृक्ष भी उसी प्रकार की बुद्धि का आश्रय लेकर वन में रहेंगे तो निःसंदेह उन्हें कुपित वायु से किसी प्रकार की क्षति नहीं हो सकेगी।

सेमल ने ऐसा सोचकर स्वयं ही अपनी शाखाएं और फूल–पत्ते आदि गिरा दिये तथा प्रातःकाल आने वाले वायु की प्रतीक्षा करने लगा। समय होने पर वायु क्रोध से तमतमाता और अनेकों विशाल वृक्षों को धराशायी करता हुआ वहाँ आया। जब उसने देखा कि सेमल अपनी शाखा और फूल–पत्ते आदि गिरा कर ठूँठ बना खड़ा है तो उसका सारा क्रोध उतर गया और उसने कहा– अरे सेमल! मैं भी क्रोध से भरकर तुझे ऐसा ही कर देना चाहता था। तेरे पुष्प, स्कन्ध और शाखादि नष्ट हो गये तथा अंकुर और पत्ते भी झड़ चुके हैं। अपनी कुमति से ही तू मेरे बल–पराक्रम का शिकार बना है।

वायु की ऐसी बात सुनकर सेमल को बड़ा संकोच हुआ और वह नारद जी की कही हुई बातें याद करके बहुत पछताने लगा।

अन्त में भीष्म जी ने युधिष्ठिर से कहा– इस प्रकार जो व्यक्ति दुर्बल होने पर भी अपने बलवान् शत्रु से विरोध करता है, उसको सेमल के समान ही संतप्त होना पड़ता है। इसलिए बलवान् शत्रुओं से कभी वैर नहीं ठानना चाहिए।

• • •

वर्ग पहेली

– प्रस्तुति :
विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

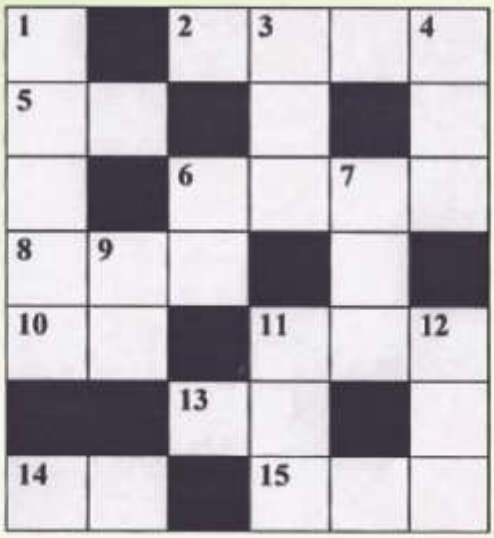

बाएं से दाएं →

2. हिन्दी भाषा में डब होने वाली पहली हॉलीवुड फिल्म डायनासोरों पर आधारित..... पार्क थी।
5. दिन का विपरीत शब्द।
6. जल में रहने वाला : (जलचर / थलचर)।
8. त्रेता युग द्वापर से .... हुआ।
10. बेमेल शब्द छांटिए : नल, छाल, फल, फूल।
11. बकरी का पुल्लिंग।
13. प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मन्दिर राजस्थान के पर्वतीय स्थल माउंट ..... में स्थित है।
14. मौसी की भाभी।
15. इसमें से जो एक पात्र महाभारत में नहीं था : द्रोपदी, विदुर, लक्ष्मण, गांधारी।

ऊपर से नीचे ↓

1. 'पराया' की भाववाचक संज्ञा : (अजवायन / परायापन)
3. राजीव गाँधी के पुत्र का नाम ..... गाँधी है।
4. कोमल का विपरीत शब्द।
6. ..... पर नमक छिड़कना यानि दुःखी व्यक्ति को और दुःखी करना।
7. 'चरक संहिता' की रचना महर्षि ..... ने की थी।
9. भगवान श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम का अस्त्र।
11. बोया पेड़ ..... का, आम कहाँ से होए यानि गलत काम करने से हमेशा हानि ही होती है।
12. कुम्भकर्ण के बड़े भाई का नाम।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

कविता : हरजीत निषाद

तिरंगा ऊँचा लहराए

ध्वज भारत का अपना प्यारा,
तिरंगा ऊँचा लहराए।
गौरव है यह मातृभूमि का,
जग में शान बढ़ाए।

सबसे ऊपर रंग केशरिया,
रणवीरों की निशानी।
नीचे हरा रंग कहता है,
अमन प्रेम की कहानी।
बीच में उज्ज्वल श्वेत रंग,
हर मन को सुख पहुँचाए।

शिखरों मैदानों में ये,
हर जगह है शोभा पाता।
सागर के सीने पर चलते,
पोतों पर फहराता।
इसको आगे लेकर चलती,
है तीनों सेनाएं।

ऊँचा सदा उठायेंगे हम,
जरा न झुकने देंगे।
बुरी नज़र डाले गर कोई,
सबक उसे हम देंगे।
आजादी का चिन्ह तिरंगा,
ऊँचा उठता जाए।

जन्म दिन मुबारक

इशु (मलदहिया)

मधुरता (नागपुर)

दृष्टि

वंशिका (होशियारपुर)

हरमिंदर (जीन्द)

आदित्य (सोलाला)

आदर्श (मलरानीपुर)

निमेश (सुनाम)

मुस्कान (बड़नेरा)

अनन्य (मेरठ)

पवनेश (विलौना)

विश्वास (रोपड़)

विनय (राजपुरा)

पावनी (दिल्ली)

वंशज (खरड़)

अंजलि (देहरादून)

अश्विन (दिल्ली)

सुहानी (कोल्हापुर)

प्राची (जम्मू)

संयम (राजपुरा)

मानित (मंडावली)

सान्वी (नेनी)

क्रिविंग (नेनी)

हार्दिक (दिल्ली)

केनिशा (दिल्ली)

लक्ष्य (अम्बाला)

सम्प्रिति (अमृतसर)

सुहानी (दिल्ली)

नवदिशा (बानी)

चेतना (दतिया)

नैतिक (रविग्राम)

दीप्तसा (सिलीगुड़ी)

वंशम (रायपुर)

निहारिका (अनूपगढ़)

सुदीक्षा (आरीपुर)

सेजल (कोल्हापुर)

समर्थ (आगरा)

तमन्ना (फतेहाबाद)

जीत (बल्लारपुर)

तपीशा (नारायणगढ़)

पंखुड़ी (अलीगढ़)

दर्शन (टोंक)

सुधार (नेजाडेला कलां)

दृष्टि (हावड़ा)

प्रतीक (सिकंदराबाद)

पारस (फरीदकोट)

लक्ष्य (दतिया)

नेतांश (दिल्ली)

अक्षय

अक्ष (चण्डीगढ़)

सुखमीत (चण्डीगढ़)

हिमानी (कालका)

भव्य (दुर्ग)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म दिनांक.....वर्ष.....

पता .....

.....

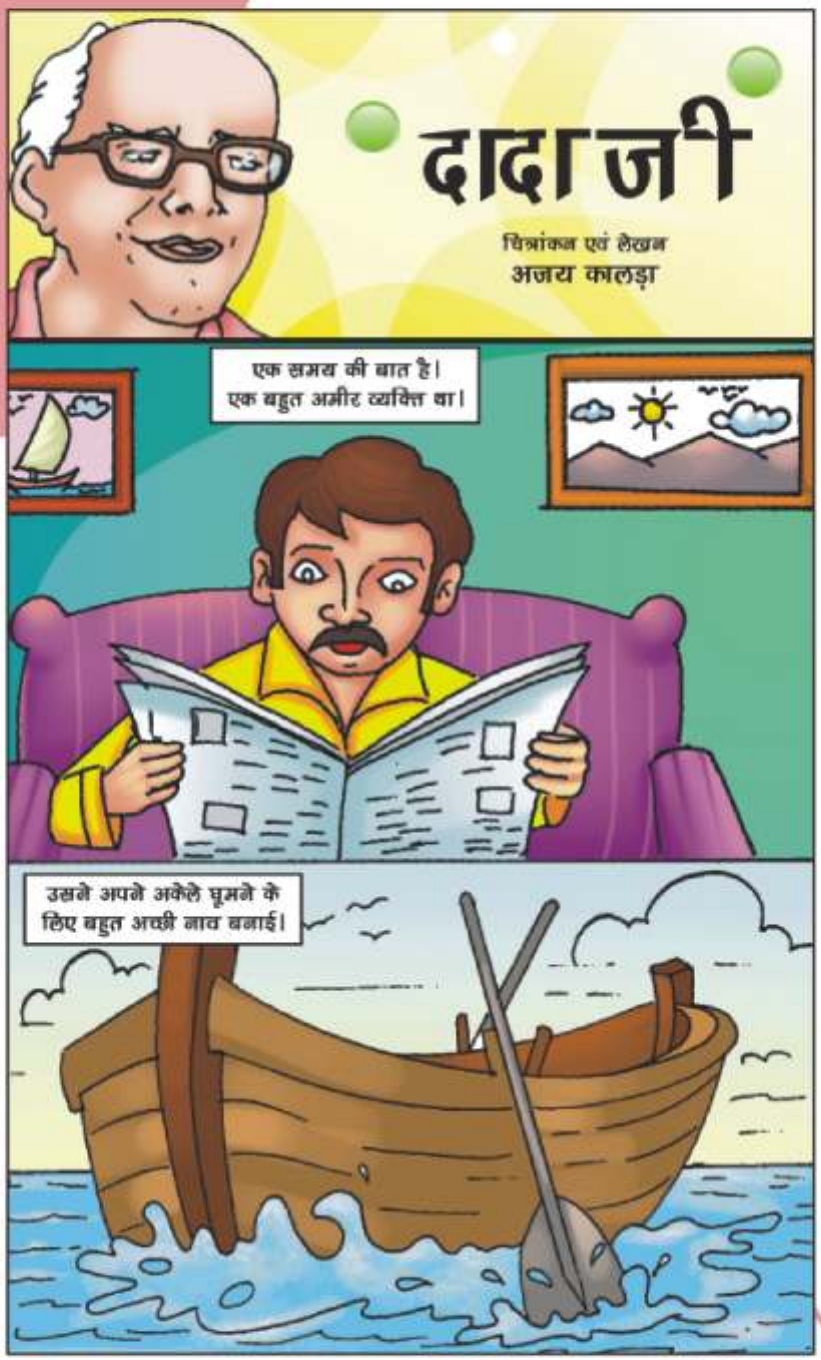
दादाजी
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
एक समय की बात है।
एक बहुत अमीर व्यक्ति था।
उसने अपने अकेले घूमने के
लिए बहुत अच्छी नाव बनाई।

और एक के दिन नाव लेकर समुद्र की सैर के लिए निकल गया।
वह समुद्र में पहुँचा ही था कि अचानक समुद्र में भयंकर तुफ़ान आ गया और उसकी नाव पूरी तरफ से तहस - नहस हो गई।
वह 'लाईफ जैकिट' की मदद से पानी मे कुद गया।

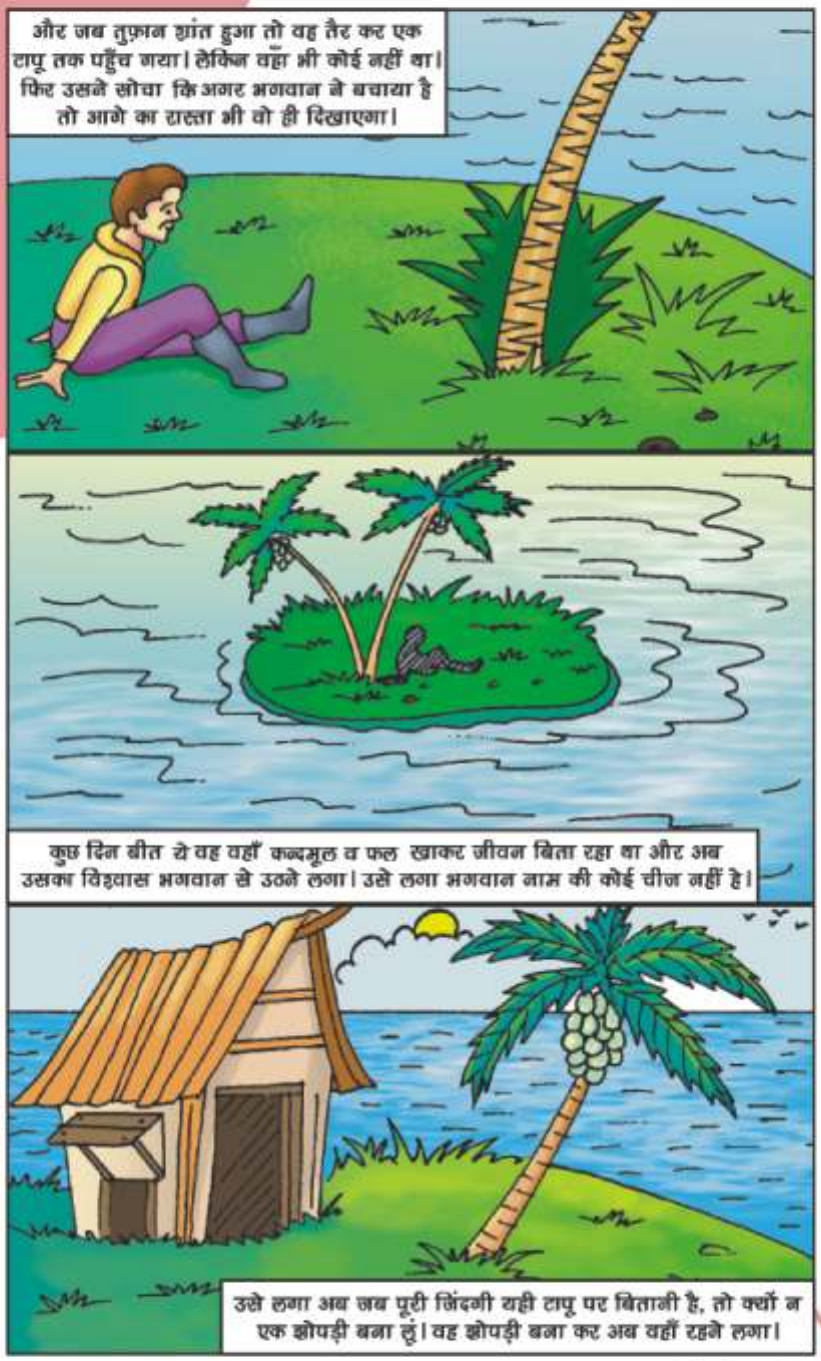
और जब तुफ़ान शांत हुआ तो वह तैर कर एक टापू तक पहुँच गया। लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। फिर उसने सोचा कि अगर भगवान ने बचाया है तो आगे का रास्ता भी वो ही दिखाएगा।
कुछ दिन बीत ये वह वहाँ कन्दमूल व फल खाकर जीवन बिता रहा था और अब उसका विश्वास भगवान से उठने लगा। उसे लगा भगवान नाम की कोई चीज नहीं है।
उसे लगा अब जब पूरी जिंदगी यही टापू पर बितानी है, तो क्यों न एक झोपड़ी बना लूं। वह झोपड़ी बना कर अब वहाँ रहने लगा।

रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला और जोर-जोर से बिजली कड़कने लगी। तभी अचानक बिजली उसकी झोपड़ी पर गिरी और झोपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यह देखकर वह आदमी टूट गया और भगवान को भला-बुरा कहने लगा और रोने लगा।
फिर अचानक से एक नाव टापू की तरफ आई और दो लोग उसमे से उतर कर उस व्यक्ति के पास आए और बताया कि हम इधर से गुजर रहे थे तो यहाँ कुछ जलते हुए देखा तो हम यहा आ गए।
यह सुन कर व्यक्ति फूट-फूट कर रोया और भगवान से माफी मांगी और बोला- भगवान मुझे क्या पता था कि मुझे बचाने के लिए आपने मेरी झोपड़ी जलाई थी।

उल्लेखनीय सफलता

सन्त निरंकारी सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 के मेधावी छात्र अश्वनी दुबे ने एक बार फिर केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 12वीं की परीक्षा में 96.4 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपना और अपने स्कूल का नाम रौशन किया।

अश्वनी दुबे (सुपुत्र स्वः शंभूनाथ दुबे, भूतपूर्व सेवादार, स.नि.म.) ने पहली कक्षा से 12वीं कक्षा तक इसी स्कूल में पढ़ाई की है और हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम ही आते रहे हैं।

अश्वनी अपना समय पढ़ाई से निकाल कर निरंकारी बाल संगत में भी देता है तथा पूरी लगन और मेहनत से सबकी सेवा का संकल्प रखता है।

केन्द्रीय माध्यामिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) की वर्ष 2014 की 10वीं. कक्षा की परीक्षा में मानसी शर्मा सुपुत्री श्री संजय शर्मा (मैनेजर, सन्त निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन) ने सभी विषयों में शत–प्रतिशत अंक प्राप्त किये। अन्य गतिविधियों में भी मानसी ने 'ए–ग्रेड' प्राप्त किया है।

शुभनीत खेड़ा (सुपुत्र श्री राजेश खेड़ा, संयोजक, संनिमं ब्रांच, कलानौर) ने केन्दीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बारहवीं परीक्षा में 96.2 प्रतिशत अंक अर्जित कर रोहतक जिलें में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति जुबिन इरानी ने शुभनीत को शुभकामना संदेश द्वारा इस सफलता पर बधाई दी है।

हँसती दुनिया परिवार की ओर से भी इन सभी बच्चों को बधाई।

बाल कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

'जंगल टाइम्स' में प्रतिदिन एक ही विशेष खबर होती थी।

चंपक वन में चोरों का आतंक बढ़ गया था। रात के समय चोर चुपके से आते और चोरी करके चले जाते। जानवरों को इसका पता तक नहीं चलता। सुबह उठते तो घर का सामान बिखरा हुआ देखकर चिल्लाते "हाय हमारे घर चोरी हो गई है... हम बर्बाद हो गये हैं... बेटी की शादी के लिए जोड़ी गई रकम चोरी हो गई... अब क्या होगा?...."

जंगल के सब जानवरों ने होशियार एवं बहादुर सोनू बंदर को रात में चौकसी करने के लिए चौकीदार रखा हुआ था। उसे भी चोरों की भनक नहीं पड़ती थी। वह रातभर सीटी बजाता था। "होशियार... जागते रहो..." कहते हुए हर गली में चक्कर लगाता। उसके बाद भी चोरियां नहीं रूक रही थीं।

लम्बू जिराफ, मीकू खरगोश, भीमा हाथी, भूरी बकरी, चपलू हिरण आदि कई जानवरों के यहाँ चोरियां हो चुकी थीं। जंगल बस्ती के कई मकानों की छतें आपस में जुड़ी हुई थीं। इस कारण चोर फूर्ति से एक मकान की छत पर दौड़ता हुआ आसानी से दूसरे मकान की छत तक पहुँच कर नीचे कूद कर भाग जाता और सब जानवर देखते ही रह जाते।

जंगल के थानेदार भूरा भालू अपने सिपाहियों के साथ आता और पूछताछ करके लौट जाता। ऊपर से कहता, "अगर एक भी चोर पकड़ में आ जाए तो हम चोरों के पूरे गिरोह को पकड़ लेंगे।"

कालू मेमने का मकान खुला हुआ था। उसकी छत की सीढ़ियां खुले हुए पिछवाड़े में आती थी। इसके बीच कोई दरवाजा नहीं था।

एक रात गली के नुक्कड़ वाले मकान से चीखने–चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। आस–पास के सभी जानवर जाग गए। "चोर नुक्कड़ के मकान से चोरी करके अभी–अभी भागे हैं।" कालू मेमना सोचने लगा "अगर चोर गली के मकान की छतें लांघते हुए उसकी छत वाली सीढ़ी से नीचे उतर कर खुले मकान से होते हुए भागने का प्रयास करे तो?"

उसके दिमाग में एक योजना बन गई। उसने साहस से काम लिया। वह लपक कर रसोई में रखा तेल का डिब्बा उठा लाया और सीढ़ियों से छत पर चला गया। वहीं से उल्टें पांव उतरते हुए तेल सीढ़ियों पर डालते हुए नीचे आ गया।

"अब धूर्त चोरों को सीढ़ियों से नीचे उतरने दो", अभी कालू मेमना सोच ही रहा था कि चोर अन्य मकानों की छतों पर से दौड़ते–फांदते हुए कालू की छत पर पहुँचे। घबराए हुए एक चोर ने अपने दूसरे साथी से कहा, "सुनो, इन सीढ़ियों से नीचे उतर कर भाग जाते हैं।"

अफरा–तफरी में चोर जैसे ही सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे तो वे फिसलते हुए धड़ाम से औंधे मुंह नीचे आ गिरे। अचानक आई इस आपदा ने उनके होश ठिकाने लगा दिये। उन्होंने जैसे ही उठ कर भागने की कोशिश की, तो दुबारा फिसल कर गिर पड़े। दोनों बूरी तरह से घायल हो गये और पीड़ा से कराह उठे।

अब कालू मेमना चिल्लाया, ''पापा ये ही चोर हैं। इन्हें बांधने के लिए रस्सी तो लाइये।'' पर घर में रस्सी नहीं थी।

कालू मेमने ने समय गंवाना ठीक नहीं समझा। वह दौड़ कर बाहर गया और पड़ौस के जानवरों को साथ ले आया। सबने मिलकर दोनों को दबोच लिया और रस्सी से बांध दिया।

ये दोनों पड़ौस के जंगल के नामी चोर वीरू और धीरू लोमड़ थे।

तब तक किसी ने पुलिस थाने में सूचना भी दे दी थी। पुलिस ने दोनों को बंदी बना लिया। जंगल के थानेदार भूरा भालू ने उनसे उनके साथियों के नाम उगलवा लिए। फिर तो चोरों का पूरा गिरोह ही पकड़ में आ गया। जानवरों ने चैन की सांस ली।

जब कालू मेमने को उसकी सूझबूझ और साहस के लिए पुरस्कृत किया गया, तो पूरे चंपक वन में खुशी छा गई।

• • •

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 119

नाम दी दौलत जे कर चाहो सत्गुर दा सत्कार करो।
सीस झुका के कहो सत्गुर नूं मेहर मेरी सरकार करो।
दर तेरे ते मंगता आया झोली पा दे जीवन दान।
प्यार अपणे नाल भर दे कासा कर के रहमत ते एहसान।
सोहणे सोहणे चरन ने तेरे इस सेवक नूं धूड़ी दे।
अपणे रंग विच रंग लै मैंनूं जो न खुट्टे मूड़ी दे।
अपणे जीवन दे हर साह ते तैनूं इक ध्यावां मैं।
तक के माया रंग–बिरंगी जी नूं न भरमावां मैं।
दर आया न खाली टोरें धुर तों एहो रीत तेरी।
जद तक साह विच साह ए मेरे तोड़ निभे एह प्रीत तेरी।
तेरी साजन ओट लई मैं तूं एं मेहरबान मेरा।
अवतार पवित्तर चरण धूड़ विच हुन्दा रहे इश्नान मेरा।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी मानव को समझा रहे हैं कि यदि ईश्वर निरंकार के नाम रूपी धन (दौलत) चाहिए तो सद्गुरु का सत्कार करो और उससे प्रार्थना करो कि हे सद्गुरु मुझ पर दया भाव रखो और मुझे वास्तविक जीवनदान दे दो। तू कृपा करके मेरे बर्तन (कासा) को अपने प्रेम से भर दो।

आपके सुन्दर (पवित्र) चरण हैं मुझ (दास) को अपने चरणों की धुड़ दे दे। मुझे अपने रंग (प्यार, सहनशीलता, दया, सर्वव्यापकता जैसी विशालता) वाले रंग में रंग लो और इतना पक्का रंग लगा दो कि मेरा यह आप वाला मूलरूप (मूड़ी) जरा भी न घटे। तू कृपा कर कि मेरे ध्यान में तू सदा समाया रहे। इस रंग–बिरंगी माया में मैं भटक न जाऊँ।

हे प्रभु (सद्गुरु) तेरी यह सदा से रीति/आदत रही है कि तेरे चरणों से जिसने जो भी मांगा तुमने उसे खाली हाथ नहीं लौटाया और जब तक मेरी सांस में सांस (श्वास) है मेरी तुम्हारे साथ अन्त तक निभे।

अन्त में निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि हे प्रभु मुझे सदा तेरा सहारा बना रहे तथा तेरी चरण धूलि (शरण) में मैं पूरी तरह मस्त रहूँ।

आलेख : विद्या प्रकाश

श्यामलाल गुप्त पार्षद झण्डा गीत के अमर रचयिता

जब कानपुर शहर के फूलबाग में 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा' झण्डा गीत के अमर गायक रचनाकार श्यामलाल गुप्त पार्षद की प्रतिमा की स्थापना हुई, तो नयनपटल पर स्वतंत्रता संग्राम का वह कालखण्ड एकाएक चलचित्रवत साकार और जीवन्त हो उठा। जब मातृभूमि की आजादी के लिए इस भूमि पर रचा गया एक गीत स्वतंत्रता के दीवानों का कण्ठहार बन गया था। कितने प्रेरणादायक और रोमांचक थे वे दिन।

वर्ष 1923 में कांग्रेस के फतेहपुर अधिवेशन में ही कांग्रेसजन को एक झण्डा गीत की आवश्यकता महसूस हुई। मगर प्रश्न यह था कि इसे लिखे कौन? सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा 'प्रताप' क सम्पादक गणेश शंकर विद्यार्थी ने श्यामलाल गुप्त पार्षद के सामने यह प्रस्ताव रखा।

पार्षद जी के 'हाँ' कहने पर भी वे गीत की रचना नहीं कर पा रहे थे। एक रोज विद्यार्थी जी ने उनसे कहा, 'बहुत घमण्ड हो गया है अपने–आप पर जो एक झण्डा गीत तक नहीं लिख सके। मुझे हर कीमत पर कल सुबह तक गीत चाहिए।' सुनकर पार्षद जी परेशान हो गये। रात को 9 बजे वे कागज और कलम लेकर चुपचाप बैठ गये। उन्होंने मन्द–मन्द स्वर में गुनगुनाते हुए कागज पर जो शब्द उतारे, वे इतिहास की अमूल्य धरोहर बन गये तथा वे इस प्रकार हैं –

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, वीरों को हरषाने वाला,
शान्ति सुधा बरसाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

स्वतंत्रता संग्राम काल में अनगिनत देशवासियों ने पार्षद जी के इस गीत का उत्साहपूर्वक गान करते हुए जुलूस में लाठियां खायीं तथा

ब्रिटिश कारागार की यात्रा की। गीत के माध्यम से मुर्दा दिलों में नयी जान फूंकने वाले राष्ट्र भक्ति भावना के इस अनुपम गायक को वर्तमान पीढ़ी नहीं जानती।

पार्षद जी गणेश शंकर विद्यार्थी से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने कानपूर के निकट अपने नरवल गाँव में गणेश सेवा आश्रम की भी स्थापना की थी। वे अत्यन्त स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अत्यन्त अभावमय जीवनयापन करते हुए उनकी 84 वर्ष की आयु में 10 अगस्त सन् 1977 को गुमनाम तथा खामोश मौत हो गयी।

एक समय था कि महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, पं. जवाहर लाल नेहरू तथा पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र से लेकर बाल कवि वैरागी तक पार्षद जी के घनिष्ठ परिचितों तथा घोर प्रशंसकों में थे। आज न पार्षद जी हैं और न जंगे आजादी का वह दौर है, मगर उनका झण्डा गीत आज भी अमर है।

आओ जाने जानकारी भरी बातें

- ★ मूंगफली की फसल के लिए गुजरात राज्य प्रसिद्ध है।
- ★ कोरबा 'हीरे' के कारण प्रसिद्ध है।
- ★ 'महानदी' पर हीराकुण्ड बाँध बनाया गया है।
- ★ बर्मा की मुद्रा का नाम 'क्यात' है।
- ★ भारत का प्रथम परमाणु शक्ति स्थल 'तारापुर' में स्थित है।
- ★ जहांगीर के दरबार में पक्षियों का सबसे बड़ा चित्रकार मँसूर था।
- ★ सिविल सेवा के लिए प्रतिस्पर्धा परीक्षा की व्यवस्था सिद्धान्त रूप में 1853 ई. में स्वीकार की गई।
- ★ घोड़ एक मिनट में 12 बार श्वांस लेता है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

कविता : आशा खत्री 'लता'

मेरे खेत की माटी

अद्भुत है मनभावन है,
मेरे खेत की माटी।
माँ सरीखी पावन है
मेरे खेत की माटी।

हल से सीना चिरवाती,
बीज बोओ फसल उगाती।
सब की भूख मिटाती है,
मेरे खेत की माटी।

छूकर देखो पोली है,
नन्हीं बच्ची सी भोली है।
भरे मेहनत की झोली है,
मेरे खेत की माटी।

जब बरखा की बूंद गिरे,
कण–कण सौंधी महक झरे।
बन जाती है खेत हरे,
मेरे खेत की माटी।

तपती और तपाती है,
लुटा कोष हर्षाती है।
तीर्थ धाम कहाती है,
मेरे खेत की माटी।

पक्षी जगत : ईमू : एक बड़ा–सा पक्षी

ईमू एक ऐसा पक्षी है, जिसका नम्बर शुतुरमुर्ग के बाद आता है। इस प्रकार ईमू संसार का दूसरे नंबर का सबसे बड़ा पक्षी है। ईमू की संख्या काफी कम रह गई है। वैसे इनकी सबसे बड़ी संख्या आस्ट्रेलिया में पायी जाती है। कुछ अन्य देशों में भी ईमू चिड़ियाघरों की शोभा बढ़ा रहा है।

शुतुरमुर्ग की तरह ईमू भी उड़ने के मामले में लाचार है। परन्तु जब दौड़ने की बारी आती है तो ईमू 50 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ लगा लेता है। आमतौर पर ईमू का पूरा शरीर भारी एवं गठा हुआ है। शरीर पर छोटे–छोटे पंख पाए जाते हैं। इसकी गर्दन काफी लम्बी होती है। जिसे यह बड़ी सरलता से इधर–उधर घुमाता रहता है।

सामान्य रूप से ईमू की दो जातियां पायी जाती हैं। पहली ईमू ड्रोमेअस नोवोदालेण्डी और दूसरी काला ईमू यानि ड्रोमेअस माइनर। आमतौर पर ईमू का भार 50 से 55 किलोग्राम तक होता है तथा ऊँचाई 180 से.मी. से 185 से.मी. तक पायी जाती है।

90 मील तक उड़ान भरने में माहिर पक्षी

बच्चों, तुम्हें तो पता होगा कि पक्षियों की उड़ने की शक्ति उनके डैंनो की बनावट पर निर्भर करती है। जो पक्षी तेजी से उड़ते हैं और जिन्हें दूर का सफर तय करना होता है उनके डैने लम्बे, पतले और नुकीले होते हैं। चौड़े डैने वाले पक्षी धीमी गति से उड़ते हैं। छोटे पक्षी आमतौर पर 20 से 40 मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ते हैं। स्वर्ण जिरिया और बतासी नाम के पक्षी तो 60 मील प्रति घंटा तथा अमेरिका का बतासी तो 90 मील प्रतिघंटा की रफ्तार से उड़ता है। हवा के रूख का असर उड़ने वाले पक्षियों पर विशेष रूप से पड़ता है। एक बार तो इंग्लैण्ड से आयरलैंड जाती हुई टिटहरियों को हवा उड़ाकर अमेरिका ले गई और उस लम्बे सफर को उन्होंने सिर्फ 12 घंटों में ही पूरा कर लिया। जो उनकी सामान्य गति से कई गुना अधिक था।

प्रस्तुति : ऋषि मोहन श्रीवास्तव

प्रेरक–प्रसंग : आर. डी. भारद्वाज 'नूरपुरी'

उपकार का फल

बहुत समय पहले की बात है, स्कॉटलैण्ड में एक किसान रहता था, जिसका नाम था ह्यूज़ फ्लैमिंग। एक दिन जब वह अपने खेतों में काम निपटाकर, शाम को घर जाने की तैयारी कर रहा था, तो अचानक उसे किसी के चीखने–चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ी। उसने आवाज़ आने की दिशा में ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की तो पता चला कि एक बच्चा मदद के लिए चीख–पुकार कर रहा है। शाम का वक्त था, सूर्य अस्त हो रहा था और थोड़ा–थोड़ा अन्धेरा भी हो रहा था। खैर, वो आवाज़ आने की दिशा में आगे बढ़ता गया। उनके खेतों के बाद थोड़ा दलदल का इलाका था और उसके बाद जंगल शुरू हो जाता था। दलदल के इलाके में पहुँचकर उसने देखा कि एक 9–10 साल का बच्चा दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ है और वह मदद के लिए चीख रहा था। वह लड़का बुरी तरह से हो रहा था और डरा हुआ भी था।

फ्लैमिंग ने लड़के को देखकर उसे हिम्मत दी और कहा, "डरो नहीं, मैं तुम्हें बचाऊँगा।" यह कहते हुए वह लड़के की तरफ दलदल में आगे बढ़ने लगा। लेकिन अभी वह थोड़ी ही दूर गया तो उसे एहसास हुआ कि दलदल तो बहुत गहरा है, अगर वह आगे बढ़ा तो

शायद वह भी उस लड़के की तरह उसमें फंस जाएगा। लड़का भी उसे देखकर खुश हो गया कि आखिरकार उसे बचाने वाला कोई आ गया है और यह यथासम्भव यत्न भी कर रहा है। लेकिन फ्लैमिंग ने वहीं रूक कर थोड़ी देर के लिए सोचा कि अपनी जान को खतरे में डाले बिना, लड़के को कैसे बचाया जा सकता है? फिर, जैसे कि उसे कोई युक्ति सूझ गई हो, वह उस लड़के से कहने लगा, "देखो बेटा! तुम डरना नहीं, रोना नहीं। मैं तुझे बचाने के लिए कोई–न–कोई इंतजाम करके 5–7 मिनट में वापस आता हूँ।

फ्लैमिंग जल्दी–जल्दी वापिस अपने खेतों की ओर भागा। खेतों में उसने अपने जानवरों के लिए एक कच्चा मकान बना रखा था। उस मकान के एक तरफ उसका खेतीबाड़ी का सामान रखा हुआ था। अपने मकान में पहुँचकर उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई, अचानक उसकी नज़र एक लम्बी रस्सी पर पड़ी। फ्लैमिंग ने तुरन्त रस्सी उठाई और वापस दलदल में फंसे उस लड़के की तरफ दौड़कर गया और लड़के से कहने लगा, "मैं यह रस्सी तुम्हारी तरफ फैंकता हूँ, तुम उसका दूसरा सिरा पकड़ लेना, ठीक है? लड़के ने "हाँ" में अपना सिर हिलाया। फ्लैमिंग ने फिर पूरे जोर से रस्सी का दूसरा सिरा लड़के की ओर फैंका। लड़के ने किसान के कहे अनुसार रस्सी के सिरे को कसकर पकड़ लिया। दूसरी ओर फ्लैमिंग उसे धीरे–धीरे खींचने लगा।

ऐसे करते–करते 4–5 मिनट की कोशिश के बाद फ्लैमिंग ने लड़के को दलदल से बाहर निकाल लिया। अगर वह लड़के को बाहर न निकालता तो न जाने लड़के का क्या हश्र होता, क्योंकि उस दलदल में कई प्रकार के खतरनाक जानवर भी थे और दलदल के पीछे तो जंगल था ही, जो कि जंगली जानवरों से भरा पड़ा था।

दलदल से निकालने के बाद फ्लैमिंग उसे अपने खेत में ले गया और जाकर उसके और अपने कपड़े, जो कि दलदल वाले कीचड़ से बुरी तरह सने हुए थे; पानी से साफ किये। फिर फ्लैमिंग के पूछने पर उस लड़के ने बताया किया उसका नाम विन्सटन है और वह दिन में अपने 7–8 दोस्तों के साथ वहाँ घूमने आया था ताकि वह गाँव की सैर कर सके और जंगली जानवरों को उनके प्राकृतिक जीवन में रहते हुए देख सके। शाम होते–होते बाकी सभी उनके साथी तो निकलकर चले गये, लेकिन वह वहाँ पर दलदल वाले कीचड़ में फंस गया।

बातें करते–करते फ्लैमिंग ने लड़के को उसके घर पहुँचाया और देर रात वह अपने घर पहुँचा। इस घटना को 10–12 दिन ही हुए थे कि एक दिन शाम को उसके घर के सामने एक गाड़ी आकर रूकी। फ्लैमिंग और उसकी पत्नी थोड़ा सकते में थे, क्योंकि उनके किसी भी रिश्तेदार व पारिवारिक मित्र के पास उस वक्त गाड़ी तो थी नहीं, तो उनके घर गाड़ी में कौन आ सकता है? वे दोनों ऐसे ही विचारों में उलझे हुए थे कि दूसरे ही पल शानदार सा सूट–बूट पहने एक सज्जन उनके घर में दाखिल हुआ। दोनों वहीं खड़े एक–दूसरे का नज़रों से ही निरीक्षण कर रहे थे कि, अचानक फ्लैमिंग ने सज्जन से पूछा, ''आप कौन है और किससे मिलना है?''

संक्षिप्त जवाब में अतिथि ने उत्तर दिया –''फ्लैमिंग से।''

''जी फरमाइए! मैं ही फ्लैमिंग हूँ।'' इतनी देर में एक लड़का भी वहाँ आ गया, जिसे पहचान कर फ्लैमिंग उनके आने का उद्देश्य थोड़ा–थोड़ा समझ गया। फ्लैमिंग की पत्नी भी उनको देखकर थोड़ा चकित थी। अतिथि और उसके लड़के को बैठाने लायक उनके घर फर्नीचर तो था ही नहीं, बस आंगन में एक टूटी–फूटी चारपाई पड़ी थी, तो फ्लैमिंग की पत्नी ने उनको चारपाई पर बैठने के लिए कहा। ऐसे वे

दोनों संकोच करते–करते बैठ गये। फ्लैमिंग की पत्नी उनके लिए पानी लेकर आई, तत्पश्चात् फ्लैमिंग ने उनसे अपने गरीबखाने पर पधारने का कारण पूछा। और बोले, ''दरअसल, मैंने आपको पहचाना नहीं, आप कौन हैं और आपको मुझसे क्या काम है?''

अतिथि ने जवाब दिया, ''मेरा नाम रैन्डोल्फ चर्चिल है। मैं एक बिजनेसमैन हूँ। आपको याद होगा कि थोड़े दिन पहले आपने एक बच्चे की जान बचाई थी जो कि जंगल के पास वाले दलदल में फंस गया था। यह वही लड़का है, मेरा बेटा विन्सटन। आज मैं आपको इसके लिए धन्यवाद करने आया हूँ। आपने मेरे बेटे को बचाकर मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है।''

फ्लैमिंग ने जवाब में बस इतना ही कहा, ''जी वो तो मेरा फर्ज था।'' बातें करते–करते रैन्डोल्फ चर्चिल ने फ्लैमिंग के घर का मुआयना भी किया। उसने देखा कि किसान का घर बहुत खस्ता हाल में है, लेकिन उस किसान परिवार में सबर–संतोष की कमी नहीं है। फिर रैन्डोल्फ ने अपने कोट की जेब से नोटों की गड्डी निकाली और फ्लैमिंग की तरफ बढ़ाते हुए बोला, ''मेरी तरफ से आपके लिए एक छोटा–सा शुकराना है, स्वीकार करें।'' पैसे देखकर फ्लैमिंग का मन गरीबी के बावजूद भी डोला नहीं; और उसने जवाब दिया, ''आपका यह शुकराना मैं स्वीकार

बहुत समय पहले की बात है, स्कॉटलैण्ड में एक किसान रहता था, जिसका नाम था ह्यूज़ फ्लैमिंग। एक दिन जब वह अपने खेतों में काम निपटाकर, शाम को घर जाने की तैयारी कर रहा था, तो अचानक उसे किसी के चीखने–चिल्लाने की आवाजें सुनाई पड़ी। उसने आवाज़ आने की दिशा में ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की तो पता चला कि एक बच्चा मदद के लिए चीख–पुकार कर रहा है। शाम का वक्त था, सूर्य अस्त हो रहा था और थोड़ा–थोड़ा अन्धेरा भी हो रहा था। खैर, वो आवाज़ आने की दिशा में आगे बढ़ता गया। उनके खेतों के बाद थोड़ा दलदल का इलाका था और उसके बाद जंगल

शुरू हो जाता था। दलदल के इलाके में पहुँचकर उसने देखा कि एक 9–10 साल का बच्चा दलदल में बुरी तरह फंसा हुआ है और वह मदद के लिए चीख रहा था। वह लड़का बुरी तरह से हो रहा था और डरा हुआ भी था।

फ्लैमिंग ने लड़के को देखकर उसे हिम्मत दी और कहा, ''डरो नहीं, मैं तुम्हें बचाऊँगा।'' यह कहते हुए वह लड़के की तरफ दलदल में आगे बढ़ने लगा। लेकिन अभी वह थोड़ी ही दूर गया तो उसे एहसास हुआ कि दलदल तो बहुत गहरा है, अगर वह आगे बढ़ा तो शायद वह भी उस लड़के की तरह उसमें फंस जाएगा। लड़का भी उसे

सुनकर वह अतिथि सज्जन खड़ा हो गया फिर मन–ही–मन थोड़ा गंम्भीर मुद्रा में सोचते हुए वह लड़के के पास गया और उसने लड़के के सिर पर हाथ फेरा, और बोला, "इसके लिए मेरे पास एक सुझाव है, अगर आपको विश्वास हो, तो मैं इसे अपने पास ले चलता हूँ। मेरा लड़का, जिसकी आपने जान बचाई थी– विन्सटन, मैं इसे उसी के साथ स्कूल में दाखिल करवा दूँगा, उसे उच्च शिक्षा दिलवाऊँगा, ताकि इसकी जिन्दगी संवर सके। आपसे यही निवेदन है कि आप ना मत कहना।"

चर्चिल की बातें सुनकर फ्लैमिंग व उसकी पत्नी एक–दूसरे की ओर देखने लग गए। फिर उन्होंने उस सज्जन के ज्यादा आग्रह करने पर अपने लड़के को उसके साथ भेजने हेतु तैयार हो गए। इस तरह रैन्डोल्फ चर्चिल, अलेक्ज़ेण्डर को अपने साथ ले गया, उसे मन लगाकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया। ऐसे करते–करते उस लड़के ने सेंट मेरीज़ हॉस्पिटल मेडिकल स्कूल से उच्च शिक्षा प्राप्त की और एक उच्च कोटि का वैज्ञानिक बन गया, जिसे आज हम सर अलेक्ज़ेण्डर फ्लैमिंग (1881–1955) के नाम से जानते हैं। यह वही वैज्ञानिक अलेक्जेण्डर फ्लैमिंग है जिसने कि 1928 में पेनिसिलन मेडिसिन की खोज की थी और इसके लिए 1945 में उसे नोबेल पुरस्कार मिला था। बहुत वर्ष बाद वह लड़का, जिसे फ्लैमिंग ने बचाया था, बड़ा होने पर वह एक बार 1943 में बहुत बुरी तरह बीमार पड़ गया, दरअसल उसे निमोनिया हो गया था और जिस दवाई के कारण उसकी जान बच पाई थी, वह पेनिसिलिन ही थी, जिसकी खोज 1928 में अलेक्जेण्डर फ्लैमिंग ने की थी और विन्सटन चर्चिल (1874–1965) वही आदमी है, जो कि बड़ा होकर इंग्लैण्ड की कन्ज़र्वेटिव पाटी का लीडर बना था। वह एक अच्छा लेखक भी रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध के समय (1939–1945) के दौरान वह इंग्लैण्ड का प्रधानमंत्री था। एक बार वह (1951–55) की अवधि के लिए भी वहाँ का प्रधानमंत्री रहा। यही नहीं, उसे 1953 में साहित्य में बेहतरीन योगदान के लिए नोबेल पुरस्कार से भी नवाज़ा गया।

कविता : कमल सिंह चौहान

हरियाली का पलना

चीं–चीं करके चिड़िया गाती,
पंख फैलाकर उड़ती जाती।
बातें करती आसमान से,
फूलों पर तितली मंडराती।

कौआ कबूतर उड़ते जाते,
घर की छतों पर फिर इठलाते।
दाना चुगते मन बहलाते,
तोते की टें–टें भी भाती।

चौमासा वर्षा का आता,
सबको देखो कितना भाता।
हरियाली का पलना देखो,
नदियां भी देखो इठलाती।

चुन्नु मुन्नू गुड्डू रानी,
खिलते चेहरे है नादानी।
मौसम संग से मिलते जाते,
धरती मंद–मंद मुस्काती।

भैया से पूछो

– रामशंकर गुप्ता (सदर बाजार, बिलासपुर)

प्रश्न : भैया जी! जीवन में हमें धर्म साथ लेकर चलना चाहिए या कर्म?

उत्तर : ठीक ढंग से सही दिशा में किये गये कर्म ही धर्म है। ये दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

प्रश्न : हम अपने व्यक्तित्व को कैसे निखार सकते हैं?

उत्तर : आत्म–विश्वास को दृढ़ कर, आत्म–चिंतन पर एकाग्र होकर सही दिशा में कदम बढ़ायें।

– राजकुमार शर्मा (कैलाटॉड, गिरीडिह)

प्रश्न : 'ईश्वर है सर्वत्र है' क्या इसे सिद्ध किया जा सकता है?

उत्तर : वैसे तो सर्वसिद्ध किसी भी चीज को सिद्ध करने की आवयश्कता नहीं है; फिर भी परमात्मा सिद्ध किया जा सकता है कि ईश्वर सर्वत्र है।

प्रश्न : कहा जाता है कि मानव एक कठपुतली है, जिसे नचाने वाला ईश्वर होता है, तो फिर मानवों द्वारा जो गलतियां की जाती हैं तो उसकी जिम्मेदारी ईश्वर की होनी चाहिए या मानव की?

उत्तर : मानव को ठीक या गलत तो स्वयं छांटना होता है। ईश्वर तो कर्म करने की शक्ति व प्रेरणा देता है। मानव धागे वाली कठपुतली की तरह नहीं है।

– देवराज 'देव' (जम्मू)

प्रश्न : कुछ लोगों के विचार में सत्संग बेकार लोगों का काम है। वे ऐसा क्यों सोचते हैं? और ऐसी सोच वालों के साथ कितनी देर संग करना चाहिए?

उत्तर : किसी भी कार्य, वस्तु या प्रकार को जाने बिना उस पर उलटे–सीधे व्यंग्य कस देना कमजोर व अव्यवहारिक लोगों का काम है। ऐसे लोगों का संग केवल तब तक ही करना चाहिए जब तक कोई उन जैसा कार्य करना या करवाना हो।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

प्रश्न : भैया जी! सबसे महान दान कौन सा है?

उत्तर : क्षमादान।

– कमल नागपाल (खण्डवा)

प्रश्न : यदि कोई व्यक्ति श्रेष्ठ बनने की कोशिश में हो, तो उसे सर्वप्रथम क्या करना चाहिए?

उत्तर : सत्य (ईश्वर) के सहारे को आधार बनाकर मन से ईर्ष्या व नफ़रत को हटा देना चाहिए फिर एकाग्र होकर निष्काम कर्म करने चाहिए।

प्रश्न : हमें 'धन निरंकार' कैसे व क्यों करनी चाहिए। करनी चाहिए तो उससे लाभ बतायें?

उत्तर : हर व्यक्ति में निराकार परमात्मा का वास है। हम चरणों को छूकर इस प्रभु–निराकार को धन्य कहते हैं। चरणों में अपने अहंकार को भी हटाने का कर्म करते हैं, इससे अहंकार का नाश होता है।

– ज्योत्सना रानी (रामपुर)

प्रश्न : वन्दनीय कौन?

उत्तर : माता–पिता। दोनों ही जीवन में पहले दिन से आपका पालन–पोषण, आपकी रक्षा, शिक्षा आदि की व्यवस्था पूरे मनोयोग से दिन–रात करते रहते हैं आपके कल्याण के लिए निरंतर चिन्तित रहते हैं। इसलिए प्रथम गुरु भी माता–पिता ही हैं, तथा उनके बाद गुरु।

प्रश्न : जब हम सेवा करते हैं तब मन में क्या भाव होना चाहिए।

उत्तर : सम्पूर्ण समर्पण भाव।

प्रश्न : संसार में सबसे उत्तम वस्तु क्या है?

उत्तर : सदाचार अर्थात् सद्चरित्र।

आओ अच्छे गुण अपनायें, हँसती दुनिया पढ़ें–पढ़ायें।

विशेष आलेख : राजेन्द्र यादव 'आजाद'

महान् वैज्ञानिक मेघनाद साह

आजादी के आंदोलन में राजनीतिज्ञों और समाज सुधारकों के साथ वैज्ञानिकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हमारे इन देशभक्त वैज्ञानिकों ने सांस्कृतिक परम्पराओं को जीवित रखते हुए आजादी के आंदोलन से जुड़कर देशहित में अनेकों उल्लेखनीय कार्य किये। इन्हीं देशभक्तों में से एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करने वाले वैज्ञानिक थे डॉ. मेघनाद साह।

वर्तमान बांग्लादेश के छोटे से गाँव के अत्यन्त ही गरीब परिवार में जन्में डॉ. साह बचपन से ही तीव्र बुद्धि व प्रखर स्वभाव के थे। विकट कठिनाईयों के बाद स्कूली शिक्षा का प्रबन्ध एक अंग्रेजी स्कूल में हो पाया। लेकिन बारह वर्ष की आयु में सन् 1905 में जब उन्होंने बंगाल के गवर्नर के खिलाफ एक आयोजन किया तो उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। अनेकों मुश्किलें उठाने के बावजूद भी उन्होंने पढ़ना नहीं छोड़ा। कलकता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में साह के अनेकों सहपाठी थे। उनमें से प्रमुख थे– सतेन्द्र नाथ बसू, प्रफुल्ल चन्द्र, महालनसीव, नीलरत्नधर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और सुभाष चन्द्र बोस।

कलकता के सांइस कॉलेज के प्राध्यापक नियुक्त होने के बाद डॉ. मेघनाद साह निरंतर अनुसंधान कार्यों में जुटे रहे। तारों के उच्च तापमान के अध्ययन के लिए उन्होंने जो समीकरण खोजे वे आज 'साह समीकरण' के नाम से जाने जाते हैं। सन् 1927 में साह साहब लंदन की रॉयल सोसायटी के फेलो निर्वाचित हुए। उस समय वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक थे। पन्द्रह वर्ष इलाहाबाद में रहने के बाद 1938 में वे पुनः कलकता सांइस कॉलेज में लौट आये।

डॉ. साह केवल एक वैज्ञानिक ही नहीं थे बल्कि देश के आर्थिक विकास के लिए विज्ञान के उपयोग की दिशा में उन्होंने चौथे दशक में ही अनेकों योजनाएं बना ली थीं। साइंस एण्ड कल्चर' नामक पत्रिका का प्रकाशन करके उसके माध्यम से वे निरंतर अपने प्रखर विचारों को व्यक्त करते रहे। वे आजादी से पहले कांग्रेस द्वारा स्थापित राष्ट्रीय योजना समिति के भी सदस्य रहे।

देश के स्वतंत्र होने के बाद सन् 1948 में उन्होंने कलकता में न्यूक्लीय भौतिक संस्थान की स्थापना की। मगर इस संस्थान (जो आज साह इंस्टीट्यूट के नाम से विख्यात है) को आगे बढ़ाने में उन्हें निरंतर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

डॉ. साह समाजवादी रूझान के वैज्ञानिक थे। कलकता के अपने संस्थान का उद्घाटन करने के लिए किसी नेता के बजाए उन्होंने फ्रांस के प्रख्यात वैज्ञानिक "फ्रेडरिक ज्यूलियो क्यूरी" को बुलाया था। सन् 1947 और 1951 के बीच साह ने शिक्षण पद्धति, औद्योगीकरण, नदी घाटी योजना, आर्थिक नियोजन आदि के बारे में अपने प्रखर विचार व्यक्त किये। अन्त में अपनी यह लड़ाई जारी रखने के लिए स्वतंत्र चुनाव लड़कर लोकसभा में पहुँचे।

डॉ. साह का मत था कि दामोदर घाटी योजना धन की अपार बर्बादी के अलावा कुछ नहीं है। वे गंगा मुंहाने के क्षेत्र में तेल की खोजबीन का कार्य अमेरिकियों को सौंपने के भी सख्त खिलाफ थे।

डॉ. साह को पुरातत्व में भी गहरी रूचि थी। उन्होंने देश के लिए एक राष्ट्रीय पंचाग बनाकर दिया। वे हमारी आजादी के आंदोलन के अन्तिम वैज्ञानिक थे जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी राष्ट्रहित के लिए संघर्ष करते रहे। इस महान् देशभक्त वैज्ञानिक का निधन 1956 में हृदय गति रूक जाने के कारण हुआ और भारत माता का यह लाडला सपूत सदा के लिए विदा हो गया। ■

हँसते हँसते ज्ञान बढ़ाती, हँसती दुनिया मन को भाती।

कहानी : साबिर हुसैन

मीकू और लकड़बग्घा

बस्ती के सात–आठ खरगोश बैठे दूब–घास खाते हुए बातें कर रहे थे। तभी पास के पेड़ पर बैठे किटकिट बंदर ने पेड़ से छलांग लगायी और खरगोशों के पास जा पहुँचा और चिल्ला कर बोला– "भागो! लकड़बग्घा आया।"

किटकिट बंदर कूदकर पेड़ पर चढ़ गया। सभी खरगोश भागे, तभी लकड़बग्घा वहाँ आ गया लेकिन तब तक सभी खरगोश सुरक्षित अपनी बिलों में पहुँच चुके थे। अगर किटकिट बंदर ने उन्हें लकड़बग्घे के आने की सूचना न दी होती तो एक–दो खरगोश लकड़बग्घे का शिकार बन जाते।

जंगल के जानवर एक–दूसरे का सहयोग करते हैं। कल ही मीकू खरगोश ने आकर किटकिट बंदर को बताया था कि बड़े बरगद के पेड़ के पास शिकारी पिंजड़ा रख गये हैं। उसमें केले आदि फल रखे हैं, जो भी बंदर केला उठाने पिजड़े में जाएगा वह फंस जाएगा। किटकिट बंदर ने मीकू खरगोश को धन्यवाद दिया, उसने सभी बंदरों को समझा दिया कि कोई पिजड़े में केले लेने न घुसे वरना उसी में बंद हो जाएगा और शिकारी उसे पकड़ ले जायेंगे।

उस दिन बस्ती के खरगोश मैदान में खेल रहे थे तभी लकड़बग्घा आ गया था। जब तक खरगोश भागते, लकड़बग्घे ने एक खरगोश को

पकड़ कर मार दिया था। लकड़बग्घा जान गया था कि यह खरगोशों की बस्ती है। इसलिए वह रोज ही आने लगा।

लकड़बग्घे ने एक बिल में खरगोश को घुसते देखा था, वह अपने पंजों से उस बिल को खोदने लगा।

"यह लकड़बग्घा तो हमारी जान के पीछे ही पड़ गया है", मीकू खरगोश बोला।

"अब तो कुछ करना ही पड़ेगा, मीकू खरगोश कहते हुए बिल के बाहर आ गया। उसके दिमाग में लकड़बग्घे से छुटकारा पाने की युक्ति आ गई थी।

"अरे कहाँ जा रहे हो, यह लकड़बग्घा तुम्हें मार डालेगा," किट्टू खरगोश बोला।

लकड़बग्घे ने मीकू खरगोश को मैदान में देखा तो उस पर छलांग लगा दी लेकिन उससे पहले मीकू ने छलांग लगा दी और एक ओर भागने लगा, लकड़बग्घा उसके पीछे दौड़ पड़ा। मीकू तेजी से भागता और आगे जाकर रूक जाता, लकड़बग्घा उसे रूका देखकर उसे पकड़ने के लिए और तेज दौड़ने लगता। लकड़बग्घे के पास आते ही मीकू फिर भागने लगता, कई बार ऐसा लगा कि लकड़बग्घा मीकू को पकड़ लेगा लेकिन वह बच कर निकल जाता।

भागते–भागते मीकू खरगोश वहाँ पहुँच गया जहाँ शिकारियों ने बड़ा–सा पिजड़ा लगा रखा, वह खुला हुआ था और अंदर फल रखे थे।

बाल कविता : बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'

रखवाली करते ताला जी

घर दुकानों और बैंकों की
रखवाली करते ताला जी।
फैक्ट्रियों गोदामों की भी,
पहरेदारी करते ताला जी।

कभी नहीं तनखाह ये लेते,
मुफ्त नौकरी करते ताला जी।
दरवाजों की कुंडी पकड़े,
लटके रहते हैं ताला जी।

सर्दी गर्मी बरसातों में,
मुस्काते रहते ताला जी।
अपनी ड्यूटी बड़े शौक़ से,
सदा निभाते ताला जी।

चोर डाकुओं से न डरते,
न घबराते ताला जी।
अपनी हिम्मत का डंका भी,
खूब बजवाते हैं ताला जी।

मीकू भाग कर पिजड़े के पीछे इस प्रकार बैठ गया कि दूर से देखने पर ऐसा लगा रहा था जैसे मीकू पिंजड़े में बैठा हो। लकड़बग्घे ने मीकू को बैठे देखा तो पिंजड़े के पास आकर मीकू को पकड़ने के लिए पिंजड़े के अंदर छलांग लगा दी। लकड़बग्घे के पिंजड़े में पहुँचते ही दरवाजा बंद हो गया और लकड़बग्घा पिंजड़े में फंस गया। मीकू ने लकड़बग्घे को पिंजड़े में कैद देखा तो खुश होकर बस्ती की ओर चल दिया।

जब मीकू ने बताया कि उसने लकड़बग्घे को पिंजड़े में कैद कर दिया है तो सभी खरगोशों ने उसके साहस और बुद्धिमानी की प्रशंसा की।

लेख : अंकुश्री

पर्यावरण और उद्योग

पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले अनेक कारणों में से उद्योग–धंधा भी एक है बल्कि उद्योगों के कारण बहुत अधिक प्रदूषण फैलता है।

उद्योग तीन प्रकार के प्रदूषण फैलाते हैं, उससे निकले बेकार के तरल से जल प्रदूषित हो जाता है, उसके तरल, ठोस और गैस विसर्जन से वायु प्रदूषण होता है, कुछ उद्योगों द्वारा शोर फैलाया जाता है, इसी प्रकार कुछ उद्योगों द्वारा दृश्य प्रदूषण भी फैलाया जाता है।

बड़े उद्योगों के निर्माण की जगह नगर बस जाते हैं, इस तरह उद्योग और उसके पास की धरती खेती योग्य नहीं रह पाती, उद्योगों के निर्माण के लिए पहाड़ों और वनों को काटना पड़ता है, प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर बनाये गये उद्योगों और बसाये गये नगरों से पर्यावरण को भारी नुकसान सहना पड़ता है।

उद्योगों को चलाने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता पड़ती है, इसके लिए भी पहाड़ों और पेड़ों की कटाई की जाती है और खनन किया जाता है पेड़ों और पहाड़ों की कटाई तथा धरती की आंतरिक खुदाई से पर्यावरण को बहुत नुकसान सहना पड़ता है।

खनिजों पर आधारित उद्योग–धंधों को चलाने के लिए खनन आवश्यक है, खनन के दौरान आसपास खनिज धूल से वायु प्रदूषित हो जाती है, वही धूल जल के साथ बह कर आसपास फैल जाती है, जिससे मिट्टी प्रदूषित होकर बंजर हो जाती है। विभिन्न खनिजों से भिन्न–भिन्न रंग की धूल निकलती है। कहीं पीला तो कहीं लाल, कहीं काला तो कहीं धूमिल, इन रंगीन धूलों के कारण वहाँ रहने वालों के कपड़े रंगीन हो जाते हैं, उनके शरीर पर भी खनिज का रंग दिखाई देता है, आंतरिक रूप से भी वे उस प्रदूषित धूल के कारण बीमार रहते हैं।

चप्पल–जूता, बैग–अटैची आदि बनाने वाले चर्म–उद्योगों से नदियों का जल बुरी तरह प्रदूषित हो जाता है, नदियों का जल प्रदूषित करने में निकट के ताप विद्युत संयत्रों का भी बहुत हाथ होता है, इन संयत्रों में कोयला के जलने से एसिड निकलता है, राख निकलती है।

सीमेंट उद्योग के निकटवर्ती इलाके में अत्यधिक मात्रा में धूल उड़ती रहती है, उस धूल में कार्बन मोनोआक्साइड, कार्बनडाई आक्साइड तथा सल्फर डाई आक्साइड गैसें मिली रहती हैं, इससे सीमेंट उद्योग के मजदूरों और आसपास के लोगों के जीवन पर खतरा आ जाता है।

अग्निरोधी ईंट उद्योगों और स्लेट–पेन्सिल उद्योगों में ग्रैन्डिंग के कारण अत्यधिक मात्रा में धूल उड़ती है और आवाज भी बहुत होती है, मजदूरों के फेफड़े, आंख, नाक और कान पर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है।

एस्बेस्टस उद्योगों और कपड़ा उद्योगों से रेशे निकल कर हवा में उड़ते हैं, ये रेशे श्वांस के साथ फेफड़े में पहुँच जाते हैं, यह स्वास्थ्य के लिए बहुत खतरनाक होता है।

सीमेंट, अग्निरोधी ईंट, स्लेट–पेंसिल, ऐस्बेस्टस आदि उद्योगों के प्रदूषक गुणों के कारण उसके आसपास पेड़–पौधे कम दिखाई देते हैं, अल्यूमिनियम उद्योगों से अल्यूमिनियम पाउडर और कास्टिक पाउडर उड़ते रहते हैं, इसे आसपास के जल–स्रोतों और वायुमंडल में प्रदूषण फैल जाता है, कास्टिक एवं अन्य रसायन उद्योगों से हवा में जहरीली गैसें फैलती हैं और निकटवर्ती नदियों का जल भी बुरी तरह प्रदूषित हो जाता है।

प्रदूषित वायु प्रसरण द्वारा दूर–दूर तक फैल जाती है, प्रदूषित नदियों का जल भी दूर–दूर तक फैल जाता है, उद्योगों से निकला रासायनिक तत्व वाष्पीकरण द्वारा आकाश में जमा हो जाता है, यह तत्व जब वर्षा के साथ नीचे गिरता है तो उसे तेजाबी बारिश कहते हैं, तेजाबी बारिश प्रदूषण की खतरनाक स्थिति का परिचायक है।

सभ्यता के विकास के साथ ही पर्यावरण का प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है, दूरदर्शी और बहुआयामी परियोजनाओं द्वारा प्रदूषण की मार को कम किया जा सकता है, ताप–विद्युत संयत्रों की जगह जल विद्युत संयत्रों की स्थापना और बड़े उद्योगों की जगह लघु तथा कुटीर उद्योगों की स्थापना द्वारा प्रदूषण का प्रभाव कम किया जा सकता है, इसके लिए उद्योगों से निकले प्रदूषणकारी उच्छीष्टों को उपचारित भी किया जा सकता है, प्रदूषण के प्रभाव को कम करने का एक बहुत सरल और सस्ता उपाय अधिक से अधिक पेड़ लगाना है, उद्योगों के इर्द–गिर्द इतने पेड़ लगा देना चाहिएं कि वहाँ जंगल–सा दृश्य बन जाये। ■

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : कमरा गर्म करने के लिए हीटर छत के पास न रखकर फर्श के निकट क्यों रखते हैं?

उत्तर : वायु में संवहन विधि के द्वारा ही ऊष्मा का संचरण होता है। यदि हीटर छत के पास रखा जाएगा तो हीटर की उष्मा नीचे को नहीं आ पाएगी। जब हीटर को फर्श के निकट रखा जाता है तो ऊष्मा संवहन विधि से वायु को गर्म करती हुई पूरे कमरे को गर्म कर देती है। यही कारण है कि कमरा गर्म करने के लिए हीटर को छत के पास नहीं रखा जाता।

प्रश्न : गीले कपड़ों को झटकने से वे ज़ल्दी क्यों सूख जाते हैं?

उत्तर : जब गीले कपड़ों को हवा में जोर–जोर से झटका जाता है तो वे अपने आस–पास की हवा को पीछे हटाते हैं। हवा जल–वाष्पों को प्राप्त कर असंतृप्त हो जाती है तथा शुष्क वायु के द्वारा प्रतिस्थापित हो जाती है। इससे वाष्पन की दर में वृद्धि होती है और गीले कपड़े शीघ्र सूख जाते हैं।

प्रश्न : कभी–कभी सोडावाटर की बोतलें क्यों फट जाती हैं?

उत्तर : सोडावाटर की बोतलों में कार्बनडाईऑक्साइड (CO_2) गैस भरी जाती हैं। गर्मियों में वायुमंडल के ताप में वृद्धि होने के कारण उसका प्रभाव सोडावाटर की बोतलों पर भी पड़ता है। गर्मियों में तापान्तर के कारण सोडावाटर की बोतलों में भरी (CO_2) गैस का दाब भी बढ़ने लगता है जिसकी वजह से कभी–कभी बोतलें फट जाती हैं।

हँसती दुनिया पढ़िए, जीवन में आगे बढ़िए।

कहानी : राधे लाल 'नवचक्र'

सच्चा दोस्त

किसी रात एक धर्मशाला में कई लोग ठहरे हुए थे। उनमें एक भला और सुलझे दिमाग का आदमी भी था। उसने अपनी रोचक बातों से सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। फिर उसने एक सवाल किया, "यहाँ कोई ऐसा है जिसका कोई सच्चा दोस्त हो?"

सवाल सुनकर वातावरण में एक क्षण चुप्पी छा गयी। फिर एक बोला, "यह कलियुग है। सच्चा दोस्त मिलता कहाँ है।"

"ठीक कहा! आजकल के दोस्त मतलबी होते हैं।" दूसरे ने पहले की बात को पुष्ट किया।

शब्दों के थोड़ा हेर–फेर के साथ वहाँ मौजूद सभी ने ऐसा ही जवाब दिया।

"फिर तो मैं खुशनसीब हूँ। छोटे–बड़े कई मेरे सच्चे–अच्छे दोस्त हैं।"

सब चौंक उठे। उनमें से एक बोला, "आज के जमाने में जहाँ अधिकतर आदमी स्वार्थ से घिरे होते हैं, आपको सच्चे दोस्त कैसे मिल गए?"

"इसमें कोई अचरज की बात नहीं है। आज भी सच्चे–अच्छे दोस्तों की कमी नहीं है।" भला आदमी बोला, "और उसे पाने का तरीका भी सरल है।"

"क्या तरीका है?" सभी उत्सुक हो उठे।

"हमें यह देखने की जरा भी जरूरत नहीं है कि जिसे हम दोस्त बनाना चाहते हैं, वह कैसा है?"

"फिर क्या देखेंगे?" सवाल उभरा।

"कुछ भी नहीं।"

"तो फिर?" सभी चकित थे।

"जरूरत है, हम जैसा दोस्त चाहते हैं, पहले हम स्वयं को दूसरे का वैसा दोस्त बनकर दिखाएं। हम निःस्वार्थ दोस्ती का परिचय दें। एक बार नहीं कई बार।"

"मगर इससे क्या होगा?" सवाल बना ही रहा।

"हम जब दूसरे का सच्चा दोस्त बनेंगे तो एक दिन हमारी सच्चाई और अच्छाई बुरे व्यक्ति को भी जरूर प्रभावित करेगी और उसे सच्चा दोस्त बनने पर मजबूर कर देगी। बस थोड़ा धैर्य की जरूरत है। साथ ही अपनी सच्चाई–अच्छाई पर हमें भरोसा भी होना चाहिए। उनमें दम हो।" भले व्यक्ति ने आगे कहा, "याद रहे, स्वार्थी व्यक्ति को ही सच्चे और अच्छे दोस्त नहीं मिलते। अच्छाई ताकतवर हो तो अपने आस–पास के लोगों को अच्छा और बुराई उन्हें बुरा बना देती है। ऐसे में दूसरों में दोष न देखकर अपने में सुधार लाएं तो स्थिति बदल सकती है।"

"बहुत खूब!" वहाँ मौजूद लोगों को भले व्यक्ति के विचार से एक नयी रोशनी मिली। उनकी सोच बदली।

जीओ और जीने दो

तूने जैसी देखी दुनिया,
मुझको भी देखने दे।
रहम कर माँ मुझ पर
मुझे भी जन्म लेने दे।
ईश्वर तो हर एक के
घर में जा सकता नहीं।
उसकी जगह तू है
तुझे क्यूं ऐसा लगता नहीं।
दीदी के संग मुझे भी,
खुशी–खुशी खेलने दे।
रहम कर माँ मुझ पर
मुझे भी जन्म लेने दे।

– प्रस्तुति : प्रो. वा.ना. आंधले

पढ़ो और हँसो

किरायेदार : (मकान मालिक से) भाई साहब, आपने कैसा मकान मुझे किराये पर दिया है? वहाँ तो चूहे ही दौड़ते रहते हैं।

मकान मालिक : तो क्या इतने कम पैसों में तुम घोड़ों की रेस देखता चाहते हो।

– अर्चना दीक्षित

सोनू : (पापा से) पापा, अगर आप को पता चले कि मैं क्लास में फर्स्ट आया हूँ तो आप क्या करोगे?

पापा : अरे बेटा मैं तुझे एक नई साइकिल दिला दूंगा।

सोनू : पापा मैंने आपके पैसे बचा दिये। मैं फेल हो गया हूँ। अब साइकिल लेने की जरूरत नहीं है।

– शोभिता गुप्ता (सतना)

एक ट्रक दूसरे ट्रक को रस्सी से बाँधकर खींच रहा था। राह चलते एक व्यक्ति को हँसी आ गई।

वह कहने लगा–हे भगवान एक रस्सी को ले जाने के लिए दो–दो ट्रक।

एक अंग्रेज पानी में डूबा जा रहा था कि फौरन एक देहाती ने आकर उसे पानी से बाहर निकाला।

अंग्रेज ने बाहर आकर कहा – Thankyou Very Much (थैंक्यू वैरी मच)

देहाती : अभी अच्छी तरह पानी में डूबे नहीं और मगरमच्छ भी देख आए।

– अंजलि अ. चंदवानी (परतवाड़ा)

एक बार एक बूढ़ा व्यक्ति हेलमेट और पैड पहन कर बल्ला उठाकर टी.वी. पर मैच देख रहा था।

उसके बेटे ने कहा : बाबा, ये टी.वी. के आगे आप बैट लेकर क्यों खड़े हो।

व्यक्ति ने कहा : बेटा, इस समय इण्डिया की बहुत खराब हालत है, ना जाने कब जरूरत पड़ जाए।

एक बार बंटी, संटी और प्रखर एक बाइक से जा रहे थे। तभी ट्रैफिक पुलिस ने हाथ दिया।
प्रखर ने कहा : दिख नहीं रहा है, पहले से तीन बैठे हैं तू कहाँ बैठेगा।

एक दुकान पर एक व्यक्ति बड़ी देर तक चीजों को हाथ में उठाता, देखता, दाम पूछता और रख देता।

उसे कुछ भी खरीदते न देखकर दुकानदार ने झुंझलाते हुए पूछा – महाशय जी, आखिर आपको चाहिए क्या?
व्यक्ति बोला – मौका।

– रोहित कुदनानी (धुलिया)

गृहिणी : (दूध वाले से) सुबह 6 बजे दूध देने आया करो।
दुध वाला : मैडम जल्दी नहीं आ सकता क्योंकि 6 बजे नल में पानी नहीं आता।

– ऊर्जा कुंदनानी (धूलिया)

प्रिंस, उज्ज्वल और पुल्कित एक मोटर साइकिल पर कहीं जा रहे थे। पुलिस ने रोक लिया।
पुलिसवाला : क्या आप लोगों को पता नहीं है कि मोटरसाइकिल पर 3 सवारी की पाबंदी है?
पुलकित : पता है इसीलिए तो एक को वापिस छोड़ने जा रहे हैं।

एक बच्चा दौड़ता हुआ आया और माँ से कहा –
हमारे पड़ौसी बहुत गरीब हैं, उनके बच्चे ने एक रुपए का सिक्का निगल लिया है और वे सब रो रहे हैं।

– अर्यन (हरदेव नगर, झड़ौदा, दिल्ली)

पति : आदमी बेकार कब हो जाता है?
पत्नी : जब उसके पास कार नहीं होती।

रोहित की माँ की तबीयत खराब हो गई। वह उसे लेकर अस्पताल गया।
डॉक्टर ने कहा : इनके कुछ टैस्ट होंगे।
रोहित घबरा कर बोला : हे भगवान, अब क्या होगा, मेरी माँ तो अनपढ़ है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

जून अंक रंग भरो प्रतियोगिता का परिणाम

प्रथम :	आयुषि 7/5, निरंकारी कालोनी दिल्ली	आयु 12 वर्ष
द्वितीय :	दिशा 3474/1, 46–सी चण्डीगढ़	आयु 13 वर्ष
तृतीय :	गौरव वार्ड नं. 12, डबवाली निरंकारी भवन के पीछे वाली गली जिला : सिरसा (हरियाणा)	आयु 11 वर्ष

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

गौरव कुमार (निरंकारी निवास, पांचुपुर), जिताली, श्वेता (अमरावती), पुष्पित सिंह (सैक्टर–3, रोहिणी), युवराज (बिशनपुरा), अंजलि (सांई नगर, कलमबोली), रवि (भाट, गाँधी नगर), प्रणव (मलिकपुर, टैगोर पार्क), बिकास सुबुद्धि (बैद्यबती), पलक (मजलिस पार्क, दिल्ली), समदिशा (निरंकारी कालोनी, दिल्ली), जय सक्सेना (फर्रूखाबाद), तांजिल (सुनाम), दीपक (पी.एन.टी. कालोनी, भीलवाड़ा), वैभव (न्यू रामनगर, करनाल), अक्षय कुमार (सैक्टर–46 बी, चण्डीगढ़), दीपिका (ओबरा), प्रिंस मोंगा (मण्डी डबवाली, सिरसा)

अगस्त अंक की रंग भरो प्रतियोगिता

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर 20 अगस्त **तक** सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों पर पुरस्कार दिये जाएंगे।

परिणामों की घोषणा हँसती दुनिया के अक्टूबर अंक में की जायेगी। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। प्रतियोगिता में 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं। प्रतियोगिता के परिणाम का निर्णय 'सम्पादक, हँसती दुनिया' का अन्तिम और मान्य होगा।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट या CBS चैक द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली – 110009

नोट : ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660200 पर फोन कर के जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कविता : अशोक जैन

हम अटूट दृढ़विश्वासी हैं!

देश हमारा हमको प्यारा,
इसकी गौरव–गाथा अमर है।

इसमें अलग–अलग भाषाएं,
जैसे नदियों की धाराएं।
लेकिन सागर एक हृदय का
सबकी हुई एक आशाएं।।

चाहे किरणें अलग–अलग हैं,
किन्तु एक सबका दिनकर है।

अलग–अलग हैं प्रान्त हमारे,
किन्तु सभी भारतवासी हैं।
फूट नहीं पड़ सकती हम में,
हम अटूट दृढ़विश्वासी हैं।।

चाहे तारे अलग–अलग हैं,
किन्तु एक सबका अम्बर है।

अलग–अलग हैं रूप हमारे,
बहुरंगी रुचियां रहती हैं।
महक अनेकों होती लेकिन,
एक हवा में ही बहती है।।

चाहे फूल उगे या कांटे,
किन्तु एक उपवन ही घर है।

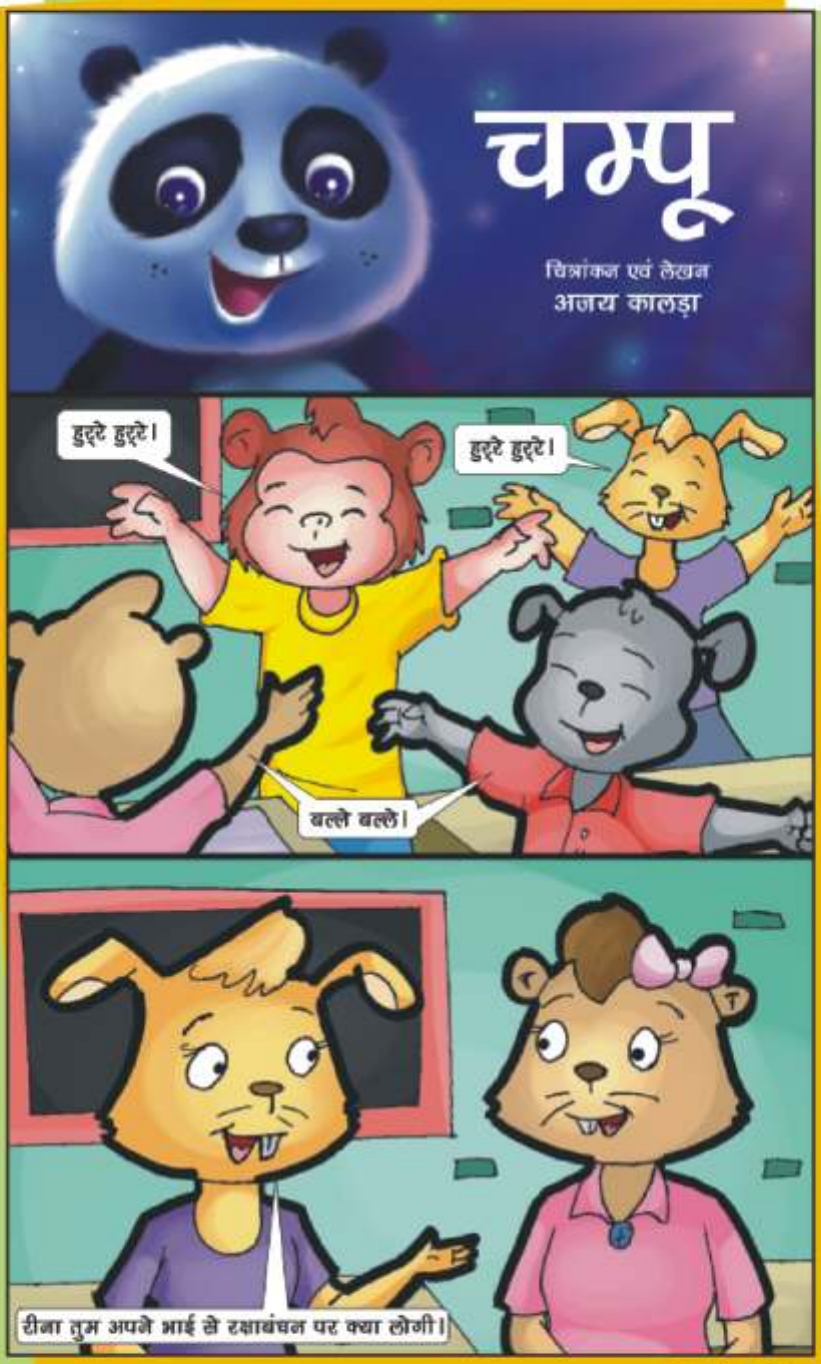
चम्पू
चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा
हुर्रे हुर्रे।
हुर्रे हुर्रे।
वल्ले वल्ले।
रीना तुम अपने भाई से रक्षाबंधन पर क्या लोगी।

मैं अपने भाई से एक सुन्दर सा सूट लूंगी।
अरे डोली तुम आ गई।
क्या बात है डोली तुम आज उदास क्यों हो।
कुछ नही माँ।

डोली तुम कुछ दिनों से उदास क्यों हो।
चम्पू मेरा कोई भाई नहीं है। मैं किसको राखी बाँधूगीं।
डोली तुम उदास मत हो। मैं तुमसे राखी बंधवाऊंगा।

सच चम्पू तुम बहुत अच्छे हो।
तो कल मैं तुम्हारे घर आ रहा हूँ।
डोली लो यह उपहार मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ।
चम्पू मुझे आज यह अहसास तक नही है कि मेरा कोई भाई नहीं है।

फोटो फीचर

मेरा मुकुट कितना सुन्दर है, और मेरी बांसुरी से भी मीठी धुन निकलती है।
– तनमीत सिंह, (बुराड़ी, दिल्ली)

बांसुरी तो मेरे पास भी है, बजा कर दिखाऊं क्या? – गौतम (अकोला)

मेरे जूते तो देखो ये कितने अच्छे हैं।
– अनुष्का

और मेरी ड्रैस तो देखो कल ही मैं इसे बाजार से लेकर आया हूँ।
– अनुराग रूपवानी (अमरावती)

हाँ भैया मेरा भी यही कहना है – ध्यान से पढ़ें, आगे बढ़ें।
– मन्नत (आस्ट्रेलिया)

ड्रेस और बांसुरी तो ठीक है पढ़ाई भी तो अच्छी होनी चाहिए। – अभिषेक कुमार (उन्नाव)

फोटो फीचर

अरे तुम लोग वहाँ
क्या कर रहे हो, मैं
तुम्हारा यहाँ इंतजार
कर रहा हूँ।
– अगम
(मुखर्जी नगर, दिल्ली)

इन फूलों के संग मेरी फूलों वाली
ड्रेस कितनी अच्छी लग रही है।
– बेबी मिट्ठी (मुकंद विहार, दिल्ली)

ड्रेस तो मेरी भी बहुत अच्छी लग रही है
और मेरा यह हैट भी। – अक्षता (जालना)

मुझे तो भूख लगी है।
अब मैं मीठा–मीठा
आम खाने जा रहा हूँ।
– नैतिक वाघवानी
(रायपुर)
→

भूख तो मुझे भी
लगी है लेकिन मैं
घर जाकर खाना
खाऊंगी।
– हर्षा आनन्द
←

क्यों खाने की बातें किये जा रहे हो, मेरी
तरह खेलो, कूदो और खुश रहा करो।
– जतिन दौलतानी (रीवा)

बाल कविता : डॉ. हरीश निगम

आजादी को कभी न भूलें

चूहा एक तिरंगा लाया,
बिल्ली ने उसको फहराया।

कुत्ते ने नव गीत सुनाया,
नया गीत सब के मन भाया।

यह प्यारा झण्डा अपना है,
इसको ऊँचा ही रखना है।

भारतवासी नेक बनेंगे,
मिल–जुलकर सब एक बनेंगे।

सपनों के झूले में झूलें।
आजादी को कभी न भूलें।

ज्ञान भरी बातें जानें–

- विश्व भर में छिपकलियों की 3000 प्रजातियां पायी जाती हैं।
- भारतीय हिरणों की प्रजातियों में चिकारा सबसे छोटा हिरण है और सांभर सबसे बड़ा हिरण।
- संसार में 3500 प्रकार के तिलचट्टे पाये जाते हैं।
- घोड़ा एक मिनट में 12 बार सांस लेता है।
- ऊँट की औसत आयु लगभग 25 वर्ष होती है।
- हाथी दो मील की दूरी से मनुष्य की गंध को पहचान लेता है।
- समुद्र के सूक्ष्म जीव जो लाखों वर्ष पूर्व मर गये थे उन्हीं के समुद्र में नीचे दब जाने से प्राकृतिक तेल बना है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

"मम्मी, ये लो आपके लिए दवाई और कुछ पैसे। एक जगह काम किया था।" सौरभ दवाई, और पैसे माँ के हाथ में रखते हुए बोला।

"तुम आज फिर स्कूल नहीं गये। तुमको पढ़ा–लिखाकर जाने क्या–क्या बनाने के सपने देख रही हूँ और तुमको मुझे सताने में ही मजा आता है। मेरी थोड़ी–सी तबीयत क्या बिगड़ी कि तुम मनमानी करने लगे। नहीं पढ़ना है तो साफ बाता दो सौरभ।" सौरभ ने कुछ कहना चाहा तो उसे रोकते हुए वे बोली, "मुझसे बात करने की जरूरत नहीं है। ये दवाई वापस कर आओ, मुझे नहीं खाना है। अपने पैसे भी अपने पास ही रखो।"

सौरभ के पिता का एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया था। जहाँ तक संभव होता, सौरभ माँ के कामों में हाथ बटाता। माँ के बीमार पड़ने पर वह चिंतित हो गया था। स्कूल से छूटने के बाद वह एक–दो घंटे कहीं न कहीं छोटे–मोटे काम कर लिया करता था। माँ की बात सुनकर उसकी आँखों में आँसू आ गए। वे उससे बात करने, उसकी कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं थी। वह चुपचाप अपने कमरे में जाकर लेट गया।

थोड़ी देर बाद सौरभ का दोस्त चैतन्य आया। उसने मम्मी को प्रणाम किया तो वे बोली, "बेटे यहाँ से तुम जाओ। सौरभ अब स्कूल नहीं जायेगा। अब वह कमाऊ हो गया है। पूरा दिन काम करेगा तो पढ़ेगा कैसे?"

"आंटी जी, आप यह क्या कह रही हैं। सौरभ पढ़ने में बहुत अच्छा है। शिक्षकों को इस पर नाज़ है। आखिर बात क्या है?" चैतन्य के पूछने पर माँ ने सारी बातें बता दी। माँ की नाराजगी का कारण जानने के बाद उसने बताया– "आँटी जी, सौरभ स्कूल आया था। प्रिंसिपल के कहने पर वह एक मरीज को खून देने गया था। सौरभ के रक्त का जो ग्रुप है, वह बहुत कम लोगों में पाया जाता है। प्रिंसिपल ने उसकी स्वीकृति लेने के बाद ही उसे हॉस्पिटल भेजा था। रक्तदान करने से मरीज की जान बच गई। उसके घर वालों ने सौरभ को पुरस्कार के रूप में रुपये दिये। सौरभ ले नहीं रहा था, उसका कहना था कि वह सौदेबाजी नहीं कर सकता। उन लोगों ने प्रिंसिपल से फोन पर बात की। प्रिंसिपल सर ने सौरभ से कहा, सम्मान के रूप में वे जो दे रहे हैं ले लो।"

यह जानने के बाद माँ उदास–सी होकर बोली, "रक्तदान–महादान। मेरे बेटे ने इतना नेक काम किया फिर भी मैंने उसे डाँटा, जाने क्या–क्या कहा।"

"आंटी इसमें आपकी कोई चूक नहीं है। सौरभ सही बात बता देता तो यह स्थिति नहीं बनती। उसे लगा होगा कि रक्तदान की बात सुनकर आप घबरा जायेंगी। आपको दुःख होगा। सौरभ कहाँ है? क्या मैं उससे मिल सकता हूँ?"

"वह अपने कमरे में सो रहा है। नींद तो उसे आई नहीं होगी। चलो देखते हैं।"

दोनों सौरभ के कमरे तक पहुँचते, इससे पूर्व ही वह बाहर आ गया। वह चैतन्य से बोला– "दोस्त की पोल खोलने वाले मिस्टर जी, सजा तो तुम्हें मिलेगी। अब हमारी बोलचाल बंद।"

माहौल खुशनुमा हो गया। माँ ने कहा तुम दोनों बातें करो, मैं चाय बनाकर लाती हूँ। सौरभ ने माँ को चाय बनाने से मना कर दिया, और खुद चाय बनाकर लाया। तीनों ने चाय पी। माँ ने कहा, "बेटे! रक्तदान महादान इसलिए है कि, इसकी थोड़ी–सी बूंदों से किसी को जीवनदान मिलता है। इसलिए इस मानवीय कार्य में कभी पीछे नहीं रहना चाहिए। लेकिन हाँ; आगे जब भी रक्तदान करना हो तो मुझे अवश्य बताना है। इसलिए कि अभी तुम बच्चे हो।"

आलेख : डॉ. रतिराम सिंह निरंकारी

समुद्र का जल नमकीन क्यों होता है?

वर्षा का जल भूमि में गिरने पर वायुमण्डल में फैले कार्बन–डाईऑक्साइड के सम्पर्क में आने के कारण कुछ अम्लीय हो जाता है। अम्ल पृथ्वी की चट्टानों का कटाव एवं भेदन करता है तथा इनके टूटे हुए हिस्सों को आयनों के रूप में अपने साथ बहाकर ले जाता है। आयन नहरों तथा नदियों के रास्ते समुद्र में चले जाते हैं। जबकि कई विघटित आयन–जीवों द्वारा उपयोग किये जाते हैं तथा अन्य लम्बे समय के लिए छोड़ दिये जाते हैं– जहाँ समय के साथ–साथ इनकी मात्रा भी बढ़ती रहती है। समुद्री जल में क्लोराइड तथा सोडियम होता है जिससे समुद्र जल के विघटित आयनों का 90 प्रतिशत से अधिक की प्रतिपूर्ति हो जाती है। समुद्र जल में कुल विघटित नमक का लगभग 3.5 प्रतिशत है। इससे समुद्र का जल नमकीन होता है।

जल का महत्व क्या है?

यह प्रकृति का नियम है कि इन्सान बिना खाना खाए तो कई दिनों तक जिन्दा रह सकता है लेकिन बिना पानी पिए इन्सान की जिन्दगी महज दो या तीन दिन ही चल सकती है। जीवन के लिए जल कितना अधिक महत्व रखता है यह इसी बात से पता चलता है कि हमारे शरीर का अधिकतर भाग भी जल ही है। लेकिन इतना अधिक महत्व रखने वाले जल के प्रति हमारा दृष्टिकोण बेहद साधारण और गैर–जिम्मेदाराना है।

जल प्रदूषण के प्रभाव क्या हैं?

जल प्रदूषण से व्यक्ति ही नहीं अपितु पशु–पक्षी एवं मछली भी प्रभावित होते हैं। प्रदूषित जल पीने, पुनः सृजन, कृषि तथा उद्योगों आदि के लिए भी उपयुक्त नहीं है। यह झीलों एवं नदियों की सुन्दरता को कम करता है। संदूषित जल (खराब किया हुआ जल) जलीय जीवन को

समाप्त करता है तथा इसकी प्रजनन शक्ति को क्षीण करता है।

जल प्रदूषण का स्वास्थ्य पर प्रभाव क्या है?

जल जनित रोग संक्रामक रोग होते हैं जो मुख्यतः संदुषित जल से फैलते हैं। हिपेटाइटिस, हैजा, पेचिश तथा टाईफाईड आम जलजनित रोग हैं; जिनसे उष्णकटिंबधीय क्षेत्र के बहुसंख्यक लोग प्रभावित होते हैं। प्रदूषित जल के सम्पर्क से अतिसार त्वचा सम्बन्धी रोग, स्वाँस की समस्याएं तथा अन्य रोग हो सकते हैं जो जलनिकायों में मौजूद प्रदूषकों के कारण होते हैं। जल के स्थिर तथा अनुपचारित होने से मच्छर तथा अन्य कई परजीवी कीट आदि उत्पन्न होते हैं जो विशेषतः उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में कई बीमारियां फैलाते हैं।

जल सरंक्षण के लिए हम क्या कर सकते हैं?

- ★ यह जाँच करें कि आपके घर में पानी का रिसाव न हो।
- ★ आपको जितनी जरूरत हो उतने ही जल का प्रयोग करें।
- ★ पानी के नलों को इस्तेमाल करने के बाद बंद रखें।
- ★ मंजन करते समय नल को, टंकी को बन्द रखें तथा आवश्यकता होने पर ही खोलें।
- ★ नहाने के लिए अधिक जल को व्यर्थ न करें।
- ★ ऐसी वाशिंग मशीन का इस्तेमाल करें जिससे अधिक जल की खपत न हो।
- ★ खाद्य सामग्री तथा कपड़ों को धोते समय नलों को खुला न छोड़ें।
- ★ जल को कदापि नाली में न बहायें बल्कि उसे अन्य उपयोगों जैसे– पौधों अथवा बगीचे को सींचने अथवा सफाई इत्यादि में लाएं।
- ★ सब्जियों तथा फलों को धोने में उपयोग किये गये जल को फूलों तथा सजावटी पौधों के गमलों को सींचने में किया जा सकता है।
- ★ पानी की बोतल में अंततः बचे हुए जल को फैंके नहीं अपितु इसका पौधों को सींचने में उपयोग करें।
- ★ पानी के हौज को खुला न छोड़ें।
- ★ तालाबों, नदियों अथवा समुद्र में कूड़ा न फैंके।

• • •

आपके पत्र मिले

मैं 'हँसती दुनिया' का नियमित पाठक हूँ। मुझे हर माह इसका बेसब्री से इंतजार रहता है। मुझे यह पत्रिका बहुत ही अच्छी लगती है। इसकी कहानियां, कविताएं एवं स्तम्भ शिक्षाप्रद होते हैं तथा इसमें प्रकाशित स्तम्भ हमारे ज्ञान में भी वृद्धि करते हैं।

'हँसती दुनिया' हर तरह से एक बेहतरीन पत्रिका है। ईश्वर से प्रार्थना है कि 'हँसती दुनिया' नित–नई ऊँचाईयों को छुए।

– विष्णु शर्मा (चाईया)

मई 2014 अंक मिला। सभी कहानियां, कविताएं और विशेष लेख बेहद पंसद आए। वर्ग पहेली हल की। पढ़ों और हँसो पढ़कर मुस्कान फैल गई। सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी हल की, उत्तर ढूंढने के प्रयास में सफलता मिल ही गई। हँसती दुनिया बच्चों के बौद्धिक विकास के साथ ही साथ बड़ों की बुद्धि की परीक्षा भी लेती है। बच्चों को जब किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता तो वे बड़ों से प्रश्न करते हैं। यह पत्रिका बड़ों के ज्ञान में भी वृद्धि करती है, यह हँसती दुनिया।

फोटो–फीचर मन को भाता है। छोटे बच्चों के छायाचित्र देखकर हृदय खुशी से भर उठता है।

– मुकेश कुमार बतरा (भूसावल)

हँसती दुनिया कितनी प्यारी,
पढ़ती है इसे दुनिया सारी।
'सबसे पहले' सिखाता अच्छी बातें।
'अवतार बाणी' बताती सच्ची बातें।
'कविताएं' प्रेम–भाव का पाठ पढ़ाती।
'कहानियां' जीवन को जाग्रत कराती।
'वर्ग पहेली' दिमाग को तेज करता,
'कभी न भूलो' हमारा ज्ञान बढ़ाता।
'रंग भरो' बच्चों का होमवर्क पढ़ाता।
'पढ़ो हँसो' रोते हुए को भी हँसाता।
'फोटो फीचर' बच्चों का
दर्पण कहलाता,
'आपके पत्र मिले' पत्रिका की
शोभा बढ़ाता।

– श्याम बिल्दानी (अमरावती)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 प		2 जु	3 रा	सि	4 क
5 रा	त		डु		ठो
या		6 ज	ल	7 च	र
8 प	9 ड	ले		र	
10 न	ल		11 ब	क	12 रा
		13 आ	बू		व
14 मा	भी		15 ल	क्ष	ण

TU HI NIRANKAR

SUPER Aqua®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरतें, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएं।

SUPER AQUA®
R.O. System

Manufacturer :

Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact
Customer Care : **09910103767, 9971830830**

Delhi off. G-4/19, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-110085
Nr. Jain Bharti Public School

Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashtra, (M) 09810533767

आसान किस्तों पर उपलब्ध

0%
FINANCE

Email : superaqua1@gmail.com

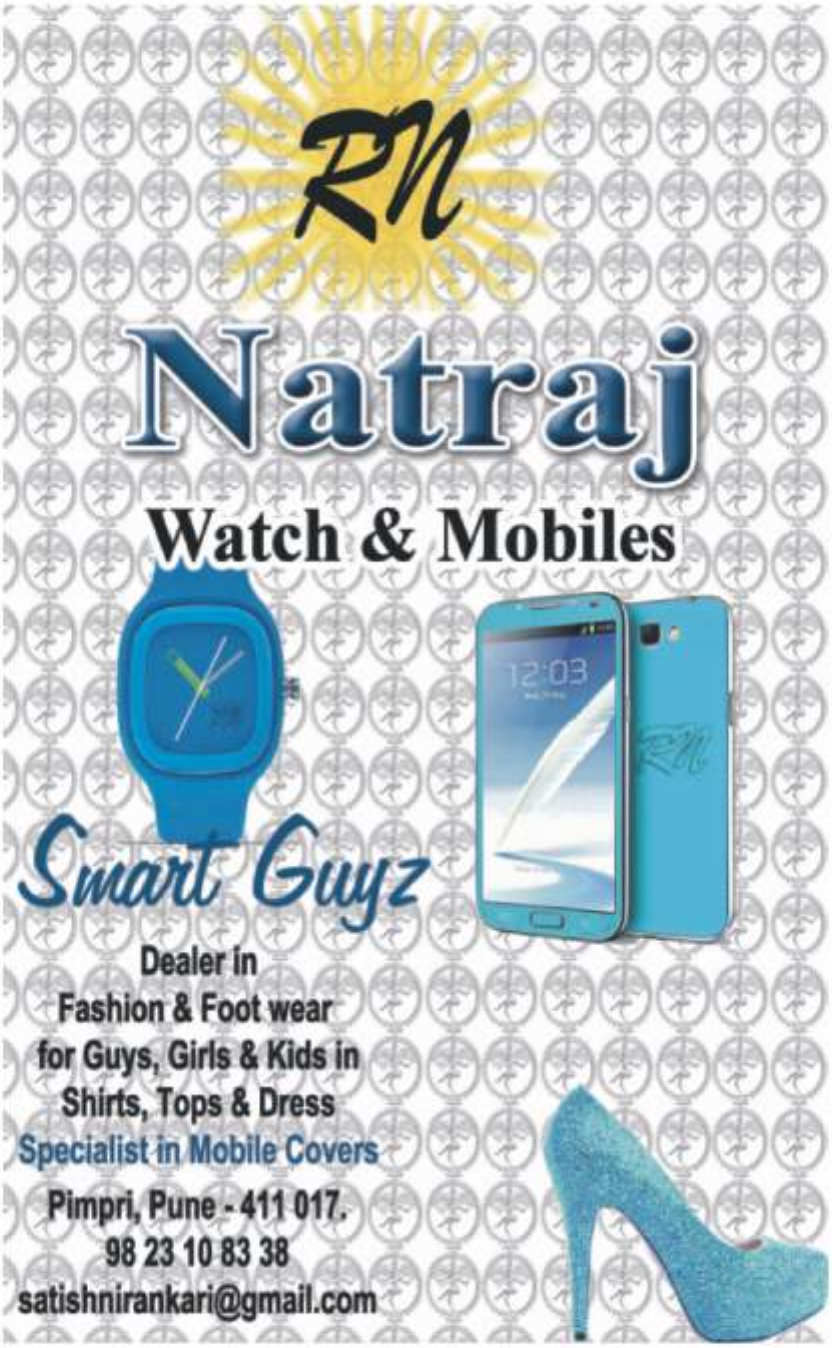
RN
Natraj
Watch & Mobiles
Smart Guyz
Dealer in
Fashion & Foot wear
for Guys, Girls & Kids in
Shirts, Tops & Dress
Specialist in Mobile Covers
Pimpri, Pune - 411 017.
98 23 10 83 38
satishnirankari@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2012-14
Licence No. U (DN)-23/2012-14
Licenced to post without Pre-payment

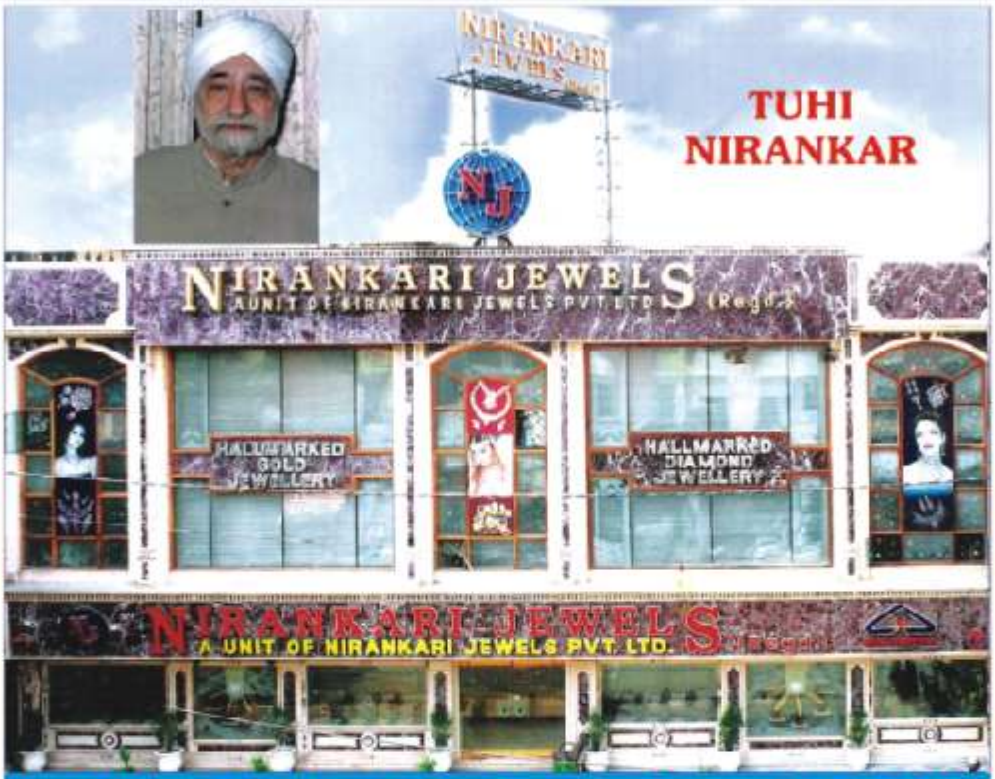

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 21st & 22nd
Dates of Publication : 16th. & 17th. (Advance Month)